http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

वर्ष : 18
अंक : 14

प्रयागराज शनिवार 28 सितम्बर 2024

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

पीएम से मिले स्टालिन

● मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने किन मुद्दो पर हुई बात?

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने शुक्रवार को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इसौ दौरान एमके स्टालिन ने राज्य में महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए शीघ्र धन जारी करने पर मांग की। डीएमके सूत्रों ने खुलासा किया कि स्टालिन का लक्ष्य चेन्नई मेट्रो और सार्वभौमिक शिक्षा कार्यक्रमों जैसी पहल के लिए वित्तीय सहायता सुरक्षित करना था। स्टालिन की यात्रा इन फंडों के आवंटन में देरी पर चिंताओं के बीच हो रही है, तमिलनाडु सरकार कथित तौर पर पीएम–एसएचआरआई स्कूलों की योजना को एसएसए फंड जारी करने से जोड़ने के केंद्र सरकार के प्रस्ताव से नाखुश है। गुरुवार शाम राष्ट्रीय राजधानी पहुंचने पर स्टालिन का सांसद टीआर बालू, तिरुचि शिवा, दयानिधि मारन, के कनिमोझी और टी सुमति सहित द्रमुक नेताओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। राष्ट्रीय राजधानी में अपने आगमन के तुरंत बाद, स्टालिन ने कानूनी टीम से मुलाकात की, जिसने तमिलनाडु के पूर्व मंत्री सेंथिल बालाजी के मामले को संभाला था, जिन्हें गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत दे दी थी। मुख्यमंत्री ने सेंथिल बालाजी की जेल से रिहाई के सफल प्रयासों के लिए अधिवक्ताओं को बधाई दी। पीएम मोदी के साथ मुलाकात के अलावा, स्टालिन के कांग्रेस के नेताओं और I-N-D-I-A ब्लॉक के अन्य सदस्यों के साथ भी चर्चा करने की उम्मीद है। यह यात्रा 28 सितंबर को कांचीपुरम में एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक रैली से पहले हो रही है, जहां विपक्षी गठबंधन के नेता इकट्ठा होंगे।

योगी सरकार का दावा

पीड़ित एससी–एसटी परिवारों की मदद के लिए 1400 करोड़ से ज्यादा आवंटित किए

लखनऊ,(एजेंसी)। योगी सरकार ने दावा किया है कि प्रदेश में पीड़ित एससी–एसटी परिवारों की मदद के लिए योगी सरकार ने 1400 करोड़ रुपये से अधिक की राशि आवंटित की है। प्रदेश में एससी–एसटी पीड़ितों को 85,000 रुपये से लेकर 8.25 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। उत्तर प्रदेश सरकार ने दावा किया है कि प्रदेश में हत्या, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार की पीड़िताओं को साढ़े सात वर्ष में 1447 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी गई। यह सहायता अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989) और नागरिक अधिकार संरक्षण (पीसीआर) अधिनियम के तहत प्रदान की जाती है। अपराध की गंभीरता के आधार पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि पीड़ितों और उनके परिवारों को जरूरत पर सरकार की तरफ से मदद मिले। केंद्र सरकार के नियमों के अनुसार यह सहायता 85,000 रुपये से 8.25 लाख रुपये तक होती है। पीड़ितों को समय पर आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करती है प्रदेश सरकार समाज कल्याण विभाग के निदेशक कुमार प्रशांत ने बताया कि राज्य सरकार का उद्देश्य पीड़ितों और उनके परिवारों को समय पर आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करना है, जिससे न्यायिक प्रक्रिया के दौरान उन्हें सहायता मिल सके। इस पहल के तहत सरकार यह सुनिश्चित करती है कि परिवारों को जांच और परीक्षण के महत्वपूर्ण बिंदुओं के आधार पर आवश्यक सहायता मिले। जनपद स्तर पर जिलाधिकारी व तहसील स्तर पर एसडीएम की अध्यक्षता में गठित है समिति विभिन्न अपराधों से पीड़ित एससी–एसटी की महिलाओं को न्याय मिले। इसके लिए जनपद स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सतर्कता व मॉनीटरिंग समिति कार्य करती है, जबकि तहसील स्तर पर उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में उपखंड स्तरीय सतर्कता एवं मॉनीटरिंग समिति की व्यवस्था की गई है। अपराध की प्रकृति के आधार पर निर्धारित की जाती है सहायता हत्या या अत्याचार के कारण मृत्यु होने पर परिजनों को 8.25 लाख रुपये की वित्तीय सहायता मिलती है। इसमें मुआवजा दो चरणों में वितरित किया जाता है। 50 प्रतिशत राशि पोस्टमार्टम के तुरंत बाद और शेष 50 प्रतिशत औपचारिक रूप से अदालत में चार्जशीट जमा होने के बाद प्रदान की जाती है। बलात्कार या सामूहिक बलात्कार (धारा 375, भारतीय दंड संहिता) के मामले में, पीड़ित 5.25 लाख रुपये की वित्तीय सहायता के हकदार हैं। कानूनी प्रक्रिया के दौरान यह सहायता चरणबद्ध तरीके से प्रदान की जाती है।

रॉबर्ट वाड्रा का मोदी पर पलटवार, बोले– अगर मैं गलत हूं तो साबित करो

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने रॉबर्ट वाड्रा और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा पर तंज कसा है। इसके जवाब में रॉबर्ट वाड्रा ने पीएम मोदी को चुनौती दी है। उन्होंने कहा, ष्आप साबित करें कि मेरी कोई जमीन हरियाणा में है या मैंने... हरियाणा डेस्क.

हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने रॉबर्ट वाड्रा और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा पर तंज कसा है। इसके जवाब में रॉबर्ट वाड्रा ने पीएम मोदी को चुनौती दी है। उन्होंने कहा, ष्आप साबित करें कि मेरी कोई जमीन हरियाणा में है या मैंने कोई गलत काम किया है। आप नहीं कर सकते, क्योंकि मैंने कोई गलत काम नहीं किया है।ष वाड्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री अपने भाषणों में लगातार उनका नाम लेते हैं। उन्होंने बताया कि मोदी की सरकार को दस साल हो गए हैं और सभी एजेंसियों ने जांच की, लेकिन कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। वाड्रा ने चेतावनी दी कि अगर कुछ है तो उसे साबित करें। कोई सबूत नहीं वाड्रा ने यह भी कहा कि मोदी पिछले दस सालों से उन्हें फर्जी मुद्दों में उलझाए हुए हैं। हरियाणा में मनोहर लाल की सरकार ने खुद अदालत में लिखित में कहा था कि वाड्रा के खिलाफ कोई सबूत नहीं है। वाड्रा ने पीएम मोदी से सवाल किया कि वे किस आधार पर आरोप लगा रहे हैं और किस चीज का इंतजार कर रहे हैं? इस तरह वाड्रा ने स्पष्ट किया कि उन्हें राजनीतिक बदले की भावना से निशाना बनाया जा रहा है।

'किसानों से झूठ बोलना बंद करे कांग्रेस'

● अमित शाह का राहुल से सवाल, खरीफ और रबी की फसल कौन सी है?

● जिले के लिए किए वादे, कांग्रेस पर साधा निशाना, बागियों को वोट न देने की अपील

हरियाणा,(एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने प्रचार में ताकत झोंक रखी है। इसी कड़ी में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह रेवाड़ी में पहुंचे। हरियाणा के रेवाड़ी में केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने जन आशीर्वाद रैली को संबोधित किया। शाह ने अपना संबोधन भारत माता की जय और वंदे मातरम के साथ शुरू किया। मंच पर उनके साथ भाजपा के वरिष्ठ नेता केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली, सुरेंद्र नागर सहित स्थानीय नेता मौजूद रहे। अमित शाह ने भारतीय जनता पार्टी के वायदे जनसभा में बताए और साथ में जिले के लिए भी कई वादे किए। उन्होंने बागियों को वोट न देकर केवल भाजपा कैंडिडेट को ही वोट देने की बात कही। अमित शाह ने रेवाड़ी से प्रत्याशी लक्ष्मण यादव, बावल से डॉक्टर कृष्ण कुमार व कोसली से अनिल यादव के लिए वोट की अपील की। मौती चौक घंटेश्वर मंदिर को भी मंत्री शाह ने प्रणाम किया। इसके बाद उन्होंने राव तुलाराम को याद करके प्रणाम किया। अमित शाह ने कहा कि ये हरियाणा की भूमि बलिदान और वीरता, ज्ञान, अध्यातम और गीता की भूमि, ये हरियाणा की भूमि शक्ति और समृद्धी की भूमि है। हमारे गुजरात में हरियाणा पंजाब को सम्मान से देखा जाता है। हरियाणा की भूमि ने हर दसवां जवान सेना में भेजा है। पीएम मोदी ने यहीं से की थी चुनाव प्रचार की शुरूआत अमित शाह ने कहा कि हमें याद है, जब प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में चुनाव प्रचार की शुरूआत रेवाड़ी से ही शुरू की थी। वन रैंक वन पैंशन को पूरा करने का काम भाजपा ने किया। उन्होंने कांग्रेस पर सेना का सम्मान न करने का आरोप लगाया। अमित शाह ने कहा कि हरियाणा का एक भी अग्नीवीर पेंशन वाली नौकरी से वंचित नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि केंद्र और हरियाणा सरकार हर अग्नीवीर को पक्की नौकरी देगी। भाजपा की सरकार आई, पूरे हरियाणा की सरकार आई अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस की सरकार में एक जिले का मुख्यमंत्री आता था तो एक जिले का विकास होता था। भ्रष्टाचार बढ़ता था। दूसरे जिले का आता था दूसरे का काम होता था। गुंडागर्दी बढ़ती थी। भाजपा सरकार आई पूरे हरियाणा की 36 बिरादरी की सरकार आई है। कांग्रेस पर हमला बोला अमित शाह ने कांग्रेस पर क्रपश्न के आरोप लगाए और कहा कि हरियाणा में दस साल के अंदर हमने भ्रष्टाचार खत्म कर दिया। कहा कि कांग्रेस की सरकार कट, क्रपश्न, अमिशन और डिलर, दलाल और दामादों का राज चलता था। भाजपा में डिलर बचे ना दलाल बचे, दामाद का तो सवाल ही नहीं है। राहुल गांधी पर साधा निशाना अमित शाह बोले कि राहुल गांधी को एनजीओ ने पकड़ा दिया है कि एमएसपी की बात करने से वोट मिल जाएगा।

राहुल गांधी अज्ञानी, विदेशों में देश का कर रहे अपमान: डॉ. मोहन यादव

चरखी दादरी (हरियाणा),(एजेंसी)। दादरी हलके से भाजपा प्रत्याशी की ओर से आयोजित जनसभा में पहुंचे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने राहुल गांधी पर कटाक्ष किए। हरियाणा सरकार की उपलब्धियों के कसीदे पढ़े। हरियाणा के चरखी दादरी में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने

दादरी हलके में आयोजित भाजपा प्रत्याशी की जनसभा में राहुल गांधी पर कटाक्ष किए। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी अज्ञानी हैं। वह विदेशों में जाकर देश का अपमान करते हैं। दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेशों में देश का मान–सम्मान बढ़ा रहे हैं। भाजपा प्रत्याशी सुनील सांगवान के समर्थन में मिसरी गांव में मतदान की अपील करने पहुंचे डॉ. यादव ने कहा कि राहुल गांधी विदेश जाकर पाकिस्तान के हितों की बात करते हैं। वह हरियाणा आए जरूर हैं, लेकिन नासमझ हैं, नादान हैं। कहा कि देश के खिलाफ जाने वालों को चुनाव में वोट की चोट से जनता सबक सिखाएगी। कहा कि भाजपा ने हरियाणा में खूब विकास कार्य करवाए हैं। जनहित की योजनाएं लागू की हैं। जनसभा में भिवानी–महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मबीर सिंह व पूर्व मंत्री सतपाल सांगवान भी मौजूद रहे।

जम्मू–कश्मीर के युवाओं ने आतंकवाद को नकारा: जेपी नड्डा

● जेपी नड्डा बोले- बुलेट के बजाय बैलेट का रास्ता चुना

जम्मू,(एजेंसी)। जम्मू–कश्मीर में अंतिम चरण के चुनाव को लेकर भाजपा अपनी पूरी ताकत लगा रही है। आज भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने जम्मू में प्रेस को संबोधित किया। इस दौरान नड्डा ने कहा कि जम्मू–कश्मीर चुनाव के बारे में सबसे बड़ी बात यह है कि यह शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ, जिसमें बूथ–कैप्चरिंग, गोलीबारी या आतंकवादी हमलों का कोई निशान नहीं था। उन्होंने कहा कि चुनाव देखने के लिए दुनिया भर के 16 देशों के राजदूत यहां आए थे। यह एक ऐतिहासिक क्षण है जब जम्मू–कश्मीर के लोग बुलेट के बजाय बैलेट की शक्ति को चुन रहे हैं। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि जम्मू कश्मीर में चुनाव के दो चरण पूरे हो चुके हैं, जो इस बात का प्रतिबिंब हैं कि किस तरीके से जम्मू कश्मीर के लोगों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्यार, विश्वास और उनकी नीतियों को अपना समर्थन दिया है। उन्होंने कहा कि ये चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से हुआ है। इस चुनाव में पिछले चुनाव की भांति कोई हिंसा नहीं हुई, कोई बूथ कैप्चरिंग नहीं हुई और कोई आतंकी हमला नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि आपको जानकर खुशी होगी कि 16 देशों के एंबेसडर यहां का चुनाव देखने आए थे और उन्होंने देखा कि कैसे यहां की कानून व्यवस्था पर नियंत्रण और प्रजातंत्र में लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और इस चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न किया। इसके साथ ही नड्डा ने कहा कि मैं ये कह सकता हूं कि ये एक ऐतिहासिक इवेंट है, जब जम्मू कश्मीर के लोगों ने बुलेट को नकार कर बैलेट का रास्ता चुना है। उन्होंने कहा कि जम्मू औसतन साल में 100 दिन बंद रहता था, पिछले पांच साल में जम्मू न बंद हुआ और न ही कोई हड़ताल हुई। जम्मू–कश्मीर के युवाओं ने आतंकवाद को नकार दिया है। ये बहुत बड़ा परिवर्तन है। अनुच्छेद–370 के समाप्त होने से पहले यहां लगभग 300–400 आतंकवादी पैदा होते थे।

सरकार घबराई हुई है, प्रधानमंत्री परेशान हैं, ज्यादा नहीं बोलते: जयराम रमेश

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। अपना हमला जारी रखते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि पीएम और श्स्वघोषितश चाणक्य ने सामाजिक–आर्थिक जाति जनगणना पर अपनी चुप्पी नहीं तोड़ी है। वे आरक्षण पर 50: की सीमा हटाएंगे या नहीं इसका जवाब नहीं दे रहे हैं। कांग्रेस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश लगातार मोदी पर हमलावर रहते हैं। इसी बीच एक बार फिर से जयराम रमेश ने पीएम मोदी पर निशाना साधा है। भाजपा सांसद कंगना रनौत के बयान के बहाने रमेश ने कहा कि भाजपा ने चुनाव के दौरान श्400 पारश और संविधान बदलने की बात की। हमारे गैर–जैविक पीएम चुप रहते हैं और दूसरों से बयान दिलवाते हैं।

उन्होंने साफ तौर पर कहा कि तीन काले कानूनों को वापस लाने की मांग बीजेपी की ओर से हर दिन आती है। अपना हमला जारी रखते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि पीएम और श्स्वघोषितश चाणक्य ने सामाजिक–आर्थिक जाति जनगणना पर अपनी चुप्पी नहीं तोड़ी है। वे आरक्षण पर 50: की सीमा हटाएंगे या नहीं इसका जवाब नहीं दे रहे हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हरियाणा, झारखंड और महाराष्ट्र के राज्य चुनावों में ये बड़े मुद्दे बनने जा रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि 4 जून, 2024, भारतीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था... आगामी राज्य चुनावों के बाद आप और अधिक बदलाव देखेंगे। यह पूछने पर कि हरियाणा, झारखंड और महाराष्ट्र में आगामी विधानसभा चुनाव किस तरह के बदलाव लाएंगे।, कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि पीएम का चेहरा देखिए। वह परेशान है। वह ज्यादा नहीं बोलते। वह दुनिया के देशों का दौरा करते हैं।

भाजपा कहती नहीं पर संविधान को मिटाने में जुटी है: राहुल गांधी

● राहुल गांधी ने युवा और किसानों के जरिए हर वर्ग को साधा, 29 मिनट चला भाषण

बरवाला, हिसार (हरियाणा),(एजेंसी)। 29 मिनट के भाषण में पीएम नरेंद्र मोदी, अदानी और अंबानी पर सबसे अधिक हमले किए। करनाल के बच्चे देव का जिक्र कर लोगों को भावनात्मक तौर पर जोड़ने का प्रयास किया। हरियाणा के हिसार के बरवाला में हरियाणा में चुनाव प्रचार के पहले दिन बरवाला पहुंचे राहुल गांधी ने अपना भाषण हरियाणा के युवाओं, किसानों, अंबानी–अदानी और पीएम नरेंद्र मोदी पर केंद्रित रखा। उन्होंने बेरोजगारी व अग्निवीर के मुद्दे पर युवाओं को साधा, वहीं एमएसपी के जरिए किसानों को जोड़ने का प्रयास किया। युवाओं के परिवारों के दर्द को करनाल के एक बच्चे देव के माध्यम से बताकर लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ा। अग्निवीर के मुद्दे को उठाते हुए सैनिकों की पेंशन खत्म करने को भी अंबानी से जोड़ा। राहुल गांधी ने 29 मिनट के भाषण में यह बताने का प्रयास किया कि युवाओं की बेरोजगारी, किसानों की दुर्दशा और तीन कानूनों के पीछे मोदी के जरिए अंबानी थे। उन्होंने अपने भाषण का समापन संविधान पर खतरा बता कर किया। बरवाला की कपास मंडी में आयोजित विजय संकल्प रैली में संबोधित करते हुए नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि हरियाणा में सभी की सरकार बनेगी। छत्तीस बिरादरी को एक साथ मिलकर सरकार बनानी है। दरअसल वह कांग्रेस के प्रति भाजपा की ओर से बनाए जा रहे नेरेटिव के तोड़ने का प्रयास कर रहे थे, जिसमें दलितों के अपमान को लेकर मुद्दा बनाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने निष्पक्ष तरीके से सभी जातियों के लिए बराबरी से भर्ती की बात कही। राहुल गांधी ने अपने भाषण के आखिर में संविधान का मुद्दा छेड़ा। उन्होंने कहा, संविधान गरीबों की रक्षा करता है। आरएसएस के लोग संविधान को मिटाना चाहते हैं। कह नहीं सकते, लेकिन इनका लक्ष्य यही है। यह लोग पहले के सिस्टम को लागू करना चाहते हैं। संविधान की बात के माध्यम से राहुल गांधी अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों को साधने का प्रयास कर रहे थे।

नीति का विरोध

आक्रमण के कारक अमन कराने में उतनी चुस्ती–फुर्ती से कारगर नहीं होते। इससे युद्ध लंबे–लंबे और भयावह होते गए हैं। रूस–यूक्रेन युद्ध के ही डेढ़ साल हो गए हैं तो सात महीनों से फिलिस्तीन और इस्राइल के बीच घमासान जारी है। दोनों मामलों में विराम कोसों दूर है।फिलिस्तीन से इस्रइल की पिछले महीने युद्ध विराम वार्ता सह समझौते की तारीख रद्द हो गई थी। अब इसी हफ्ते का नया दिन मुकर्रर हुआ है। यह राहत की बात है। अमेरिका की निगहबानी में मिस्र और कतर इसकी अगुवाई करेंगे। फिलिस्तीन की मांग है, इस्राइल तत्काल जंग रोके। उसकी तबाह–बरबाद बड़ी आबादी के लिए वैश्विक राहत–पुनर्वास कार्य चलाने दे और फिलिस्तीन राष्ट्र का स्थायी समाधान करे।

वहीं तेल अबीब का कहना है कि हमास के आतंकी हमले रोकने की स्थायी गारंटी दें और उसके नागरिक–सैनिक बंधकों को बिना शर्त रिहा करे, गाजा–पट्टी को मुक्त क्षेत्र रहने दे। इन्हें मानने में हर्ज ही क्या है? इस आम ख्याल के विपरीत, अंतिम नतीजे मिलने में कई पेच हैं।फिर भी जंग कुछ दिनों के लिए ही सही, रोकी जा सकती है और बंधकों की रिहाई एवं राहत–पुनर्वास कार्य युद्ध स्तर पर चलाए जा सकते हैं। पर 'जंग चलती रहेगी और बंधक रिहा भी होंगे' कि इस्रइली उम्मीद को पस्त हुआ फिलिस्तीन मानने की स्थिति में नहीं है। इसलिए हमले के जवाब में जोरदार हमले हो रहे हैं। बेंजामिन नेतन्याहू की इस दबावकारी नीति का विरोध उनके अपने घर में हो रहा है। खास कर तीन बंधकों के शव मिलने के बाद बाकी को जिंदा छुड़ाने के मुद्दे पर इस्रइली सडकों पर हैं।यह स्थिति इसके बावजूद है कि इस्रइली हमले में 35 हजार से भी अधिक फिलिस्तीनी मारे गए हैं। इसने पूरे विश्व को सिहरा दिया है। अंतरराष्ट्रीय न्यायालय का नेतन्याहू को तत्काल जंग रोकने और उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश इसी संदर्भ में है।वार्ता पर नई रजामंदी–जंग के बीच ही सही–नेतन्याहू पर बन रहे इसी दबाव को जाहिर करता है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां भी इसी तरफ बढ़ रही हैं। संयुक्त अरब अमीरात एवं बहरीन के दोस्त हो जाने के बावजूद हाथ मिलाते–मिलाते रह गए सऊदी अरब के प्रिंस ने यूरोपियन यूनियन के विदेश मंत्रियों के बीच साफ कर दिया है कि द्वि–राष्ट्रवाद ही समस्या का स्थायी समाधान है। भारत कब से इसी शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का पैरोकार रहा है।

आज का राशिफल

डॉ बिपिन पाण्डेय ज्योतिष विभाग लखनऊ विवि

मेष–आज मन खुश रहेगा व जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति के आसार हैं आपको थोड़ा संयम से रहने की आवश्यकता होगी। आपके परिवार का कोई सदस्य आपके लिये मार्गदर्शक बनेगा। थकान महसूस होगी। आराम के लिए समय निकालें।

वृष –आज आपको स्वास्थ्य को लेकर आपको थोड़ा सचेत रहने की आवश्यकता होगी। विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य हासिल करने में थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है लेकिन उन्हें इस कड़ी मेहनत का अपेक्षित परिणाम भी हासिल होगा। दिन की शुरुआत में आपको थोड़ा सचेत रहने की आवश्यकता है।

मिथुन –आज अपने स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा चिंता न करें, क्योंकि इससे आपकी बीमारी और बिगड़ सकती है। पैसे कमाने के नए मौके मुनाफा देंगे। आपको पहली नजर में किसी से प्यार हो सकता है। घर में मरम्मत का काम या सामाजिक मेल–मिलाप आपको व्यस्त रखेगा। व्यापारियों के लिए अच्छा दिन है।

कर्क –दुश्मन की ताकत का अंदाजा लगाए बिना उलझना ठीक नहीं है। जीवनसाथी की भावनाओं का सम्मान करें। धर्म–कर्म में आस्था बढ़ेगी। विरोधी परास्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य में विलंब संभव है। लाभ होगा। अपने प्रेमी या जीवनसाथी की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह –आज पुरानी गलतियों को लेकर भय बना रहेगा। साझेदारी में चल रहा गतिरोध दूर होने के आसार है। आयात–निर्यात के कारोबार में बड़ा लाभ संभव है। समान विचारधारा वाले लोगों के साथ काम करना आसान रहेगा। दूसरों की गलती अपने पर आ सकती है। काम में देरी से लाभ की मात्रा सीमित होगी।

कन्या –आज के दिन आपको सुख–समृद्धि, कार्यक्षेत्र में उन्नति, सुखद सफल यात्राएं, परिवार और जीवन साथी का सहयोग सब मिलने के आसार हैं। विवाहित व्यक्ति अपने जीवनसाथी में पूर्णतया विश्वास जतायें अन्यथा संबंधों में खटास पैदा हो सकती है। आपके कर्मक्षेत्र, आपके सम्मान व आपके नाम पर पडने के आसार हैं।

तुलाःआज भाग्य आपके साथ है। लंबे समय से चले आ रहे प्रेम संबंधों को नया रूप देने के लिए अच्छा मौका है। आज स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। अचानक सेहत बिगड़ सकती है और कई जरूरी काम भी रुक सकते हैं। परिवार के लोग आपसे थोड़े नाराज हो सकते हैं।

वृश्चिकः आज आप अकेलापन महसूस कर सकते हैं, इससे बचने के लिए कहीं बाहर जाएं और दोस्तों के साथ कुछ समय बिताएं।आज जिस नए समारोह में आप शिरकत करेंगे, वहाँ से नयी दोस्ती की शुरुआत होगी। आज आपका प्रिय आपके साथ में समय बिताने और तोहफे की उम्मीद कर सकता है।

धनुः आज आपके परिश्रम से किए गए कार्य में सिद्धि होगी। नौकरी में आप का सम्मान बढेगा। यात्रा के दौरान आप नयी जगहों को जानेंगे। और महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात होगी। आप अपने प्रिय द्वारा कही गयी बातों के प्रति काफी संवेदनशील होंगे। अगर आप सूझ–बूझ से काम लें, तो आज अतिरिक्त धन कमा सकते हैं।

मकरः आज आपके आय के नए स्रोत बनेंगे। आकस्मिक धन के अवसर मिलेंगे। मित्रों और जीवनसंगिनी के सहयोग से राह आसान होगी। आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। दफ्तर का तनाव आपकी सेहत खराब कर सकता है। अपने जज्बात पर काबू रखें। आज आपको अपने प्रिय की याद सताएगी।

कुंभः आज आप करिअर से जुड़े फैसले खुद करें, बाद में इसका लाभ आपको मिलेगा। सहकर्मियों और कनिष्ठों के चलते चिंता और तनाव के क्षणों का सामना करना पड़ सकता है। माता–पिता की मदद से आप आर्थिक तंगी से बाहर निकलने में कामयाब रहेंगे। आज दोस्तों के साथ बाहर घूमना आपके मन को खुशी देगा।

मीनः आज भाग्य पर निर्भर न रहें और अपनी सेहत को सुधारने की कोशिश करें। आप उन लोगों की तरफ वादे का हाथ बढ़ाएंगे, जो आपसे मदद की गुहार करेंगे। यह दिन आपके सामान्य वैवाहिक जीवन से कुछ हटकर होने वाला है। यह दिन आपके सामान्य वैवाहिक जीवन से कुछ हटकर होने वाला है।

मंत्रिमंडल में अनुभवी व्यक्ति समाधान कर लेंगे

अवधेश कुमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के 72 सदस्यीय मंत्रिमंडल के बारे में यह टिप्पणी उचित नहीं लगती कि इसके पीछे गठबंधन दलों के साथियों का बहुत ज्यादा दबाव है।72 सदस्यीय मंत्रिमंडल में शीर्ष स्तर पर कोई बदलाव नहीं हुआ है। गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, वित्त मंत्री, विदेश मंत्री और यहां तक कि सड़क परिवहन, रेल तथा शिक्षा मंत्री भी पूर्व सरकार के ही हैं। विरोधी मोदी को तानाशाह या लोकतंत्र विरोधी की उपाधि देते रहे हैं। उनकी आलोचना अभी भी जारी है और वे कह रहे हैं कि मोदी गठबंधन सरकार नहीं चला पाएंगे क्योंकि उनका स्वभाव ही गैर लोकतांत्रिक है। इस तरह की विरोधी आलोचनाओं पर टिप्पणी करने की जगह हमें समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।यह बात सही है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2001 से अभी तक मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में कभी बहुमतविहीन सरकार नहीं चलाया। वह जिस तरह बड़े कठोर निर्णय साहस के साथ करते रहे हैं उनका ध्यान करते हुए अनेक लोगों का मानना है कि यह स्वभाव गठबंधन सरकार चलाने के रास्ते की बाधा बन जाएगा। गठबंधन सरकार को लेकर लोग आशंकाएं उठाएंगे, लेकिन मोदी के अंदर सरकार चलाने तथा काम करने की इच्छा है।

वैसे मंत्रिमंडल गठन से लेकर विभागों के बंटवारे तक यह कहना कठिन है कि प्रधानमंत्री दबाव में काम कर रहे हैं। थोड़े शब्दों में कहें तो मोदी का 72 सदस्यीय मंत्रिमंडल भारत के भविष्य को लेकर उनकी योजनाओं, राजनीतिक आवश्यकताओं, साथी दलों के बीच संतुलन बनाने के साथ अनुभव, उम्र आदि के बीच समन्वय बनाने की कोशिश है। पिछली सरकार के 37 मंत्री इसमें हैं। भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की स्वास्थ्य मंत्री के रूप में वापसी हुई है। सहयोगी दलों में हिंदुस्तान आवाम मोर्चा (हम) के नेता और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री 78 वर्षीय जीतन राम मांझी, जद (यू) के राजीव रंजन सिंह, तेलुगू देशम के 36 वर्षीय के राममोहन नायडू, लोजपा के 41 वर्षीय चिराग पासवान और 37 साल की रक्षा खड़से जैसी सरकार की सबसे युवा मंत्री को आधार बनाएं तो कैबिनेट का चेहरा आपकी समझ में आ जाएगा। पिछली सरकार में केवल तीन राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार के थे।इस बार इनकी संख्या 5 हो गई है। इनमें हरियाणा से रविंदरजीत सिंह, जम्मू–कश्मीर से जितेंद्र सिंह और राजस्थान से अर्जुन राम मेघवाल की स्थिति पिछले सरकार के समान है। उत्तर प्रदेश से रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी को स्वतंत्र प्रभार के साथ राज्यमंत्री बनाया गया है।

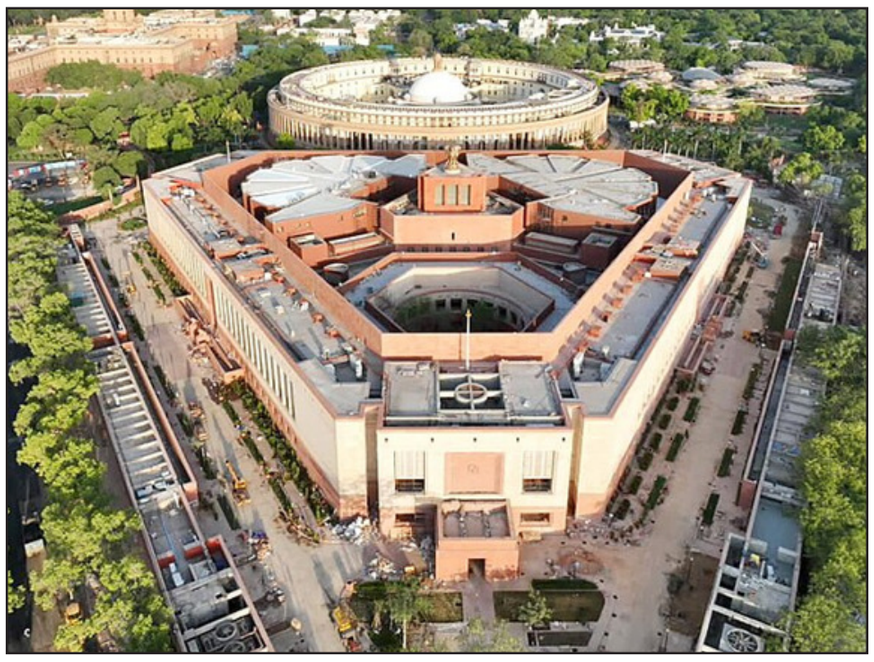

पिछली बार 29 राज्य मंत्री थे, इस बार 36 हैं। मंत्रिमंडल में पांच पूर्व मुख्यमंत्री हैं। 33 मंत्री पहली बार केंद्र सरकार का हिस्सा बने हैं जिनमें सात सहयोगी दलों के हैं। इससे आगे सामाजिक संतुलन की दृष्टि से देखें तो पिछड़ी जातियों के 27, अनुसूचित जाति के 10, अनुसूचित जनजाति के पांच और अल्पसंख्यक समुदाय के पांच मंत्री बनाए गए हैं। इस तरह पिछड़ा, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अल्पसंख्यक समुदाय के 47 मंत्री हुए। देशव्यापी प्रतिनिधित्व की दृष्टि से देखें तो इनमें 24 राज्यों का प्रतिनिधित्व है। पंजाब से भाजपा का कोई सांसद नहीं है, लेकिन रवनीत सिंह बिट्टू को राज्य मंत्री बनाया गया है।

उत्तर प्रदेश के परिणाम को देखते हुए माना जा रहा था कि वहां से कम मंत्री होंगे, लेकिन 10 मंत्री बनाए गए हैं और बिहार से आठ। सात महिलाएं हैं। केरल में भाजपा की पहली बार विजई हुई है इसलिए सुरेश गोपी को मंत्री पद मिलना ही था। दूसरे नेता केरल भाजपा के महासचिव जॉर्ज कोरियन हैं जिन्होंने 1970 में जनसंघ से लेकर लगातार भाजपा के लिए संघर्ष किया था। बंगाल से दो लोक सभा सदस्यों डॉ. सुकांत मजूमदार और मतुआ समुदाय के शांतनु ठाकुर को राज्य मंत्री के रूप में शामिल किया गया है। सुकांत उत्तरी बंगाल से हैं तो शांतनु ठाकुर दक्षिण बंगाल के मतुआ समुदाय से हैं जो अनुसूचित जाति वर्ग में आते हैं। भाजपा ने उत्तर बंगाल की आठ में से 5 सीट पर जीत दर्ज की है। शांतनु ठाकुर कोलकाता से सटे उत्तर 24 परगना जिले में बनगांव सीट से जीते तो सुकांत उत्तर बंगाल की बालूरघाट सीट से। बंगाल में यदि बेहतर विजय मिली होती तो वहां से और मंत्री बनाए जाते। इस तरह कोई नहीं कह सकता कि यह मंत्रिमंडल कुछ क्षेत्र, समूह, कुछ जातियां या परिवारों तक सीमित है।

इन सबको एक साथ मिलाकर देखें तो पहले निष्कर्ष आएगा कि यह नीतियों और व्यवहार में निरंतरता का मंत्रिमंडल है। सीसीएस यानी सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति में प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 2019 से हैं। इसलिए नीति में कोई बदलाव होगा ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। निश्चित रूप से विश्व की दृष्टि मंत्रिमंडल पर रही होगी और संदेश जा चुका है कि रक्षा, सुरक्षा, विदेश, वित्त सहित अन्य प्रमुख मामलों में नीतियां और व्यवहार स्थिर रहने वालीं हैं। एक पार्टी की बहुमत तथा गठबंधन की सरकार के कार्य व्यवहारों में अंतर रहा है। देश का आर्थिक विकास, सड़कों का विस्तार, अंतरिक्ष सुरक्षा तथा रक्षा के मामले में सक्षमता और आत्मनिर्भरता का विरोध कौन पार्टी करेगा? जिन्हें विवादास्पद कहा जा रहा है उनमें सर्वोपरि समान नागरिक संहिता है जो भाजपा के चुनावी वादों में शामिल है। इस संदर्भ में मोदी सरकार के कदमों को लेकर दृष्टि रखनी होगी। हालांकि जद (यू) ने इसका विरोध नहीं किया केवल ठीक प्रकार से विचार कर लाने की बात की थी।भाजपा को बहुमत होता तो समान नागरिक संहिता को संसद के पटल पर लाने और पारित करने में समस्या नहीं होती। क्या मोदी सरकार इस विषय को कुछ समय के लिए एजेंडा से बाहर रखेगी? अगर गठबंधन से 72 में केवल 11 मंत्री हैं तो इसे दबाव में आना तो नहीं कह सकते। वैसे भी मंत्रिमंडल में इतने अनुभवी व्यक्ति हैं कि कोई मतभेद या सहमति उभरने पर अपने अनुभव के आधार पर वह समाधान कर लेंगे। इतने अनुभवी नेताओं के रहते हुए तत्काल यह नहीं मानना चाहिए कि प्रधानमंत्री मोदी की अगले 5 वर्षो में विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था तथा 2047 तक विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनाने जैसे लक्ष्य के मार्ग में मंत्रिमंडल आपसी मतभेद के कारण बाधा बन जाएगा।

बिहार सरकार को तगड़ा झटका

पटना हाई कोर्ट ने 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 प्रतिशत किए गए राज्य सरकार के आरक्षण को रद्द कर दिया है। यह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुवाई वाली बिहार सरकार को तगड़ा झटका माना जा रहा है।यह दलितों, पिछड़े वर्गों व आदिवासियों को सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में दिया जा रहा था। बिहार की तत्कालीन महागठबंधन सरकार द्वारा बीते साल नवम्बर में जाति गणना के आधार पर इन वर्गों के लिए आरक्षण सीमा बढ़ाने का कानून बनाया गया था।अदालत ने विभिन्न याचिकाओं की सुनवाई के बाद इस बढ़ी आरक्षण सीमा को संविधान के अनुच्छेद 14, 16 व 20 का उल्लंघन बताया। जैसा कि शीर्ष अदालत पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि कोई भी राज्य सरकार 50 प्रतिशत की तय सीमा से अधिक कोटा नहीं लागू कर सकती है, जबकि बिहार में आर्थिक रूप से पिछड़ों के लिए 10 फीसद मिलाकर यह आरक्षण 75 प्रतिशत पहुंच गया था।

अदालत का मानना है कि बिहार में कुल जनसंख्या के केवल 1.57 प्रतिशत लोग ही सरकारी नौकरियों में हैं। जनसंख्या के अनुपात में सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व भी पर्याप्त बताया जा रहा है।लांकि राज्य सरकार इस आदेश के खिलाफ सबसे बड़ी अदालत का दरवाजा खटखटाने की तैयारी में है। दरअसल, जैसा नजर आता है कि आरक्षण अब राजनीतिक पार्टियों के लिए जनता को फुसलाने का साधन मात्र रह गया है। उनका ध्येय समाज में व्याप्त गैर–बराबरी को मिटाना नहीं रहा।वे मतदाताओं को बड़ी तादाद में प्रभावित करने के उद्देश्य से व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करते नजर आते हैं। तमाम अगड़ी जातियां मानती हैं कि आरक्षण के चलते नौकरियों क लाले पड़ रहे हैं। वे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के प्रभावित होने का रोना भी रोती रहती हैं, परंतु यह भी गलत नहीं है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था में विभिन्न जातियोंध्समुदायों को जबरदस्त अन्याय सहना पड़ा है।उनके लिए कोटा तय कर, उन्हें सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक तौर पर बराबरी पर लाने के प्रयासों पर अड़चनें लाने उचित नहीं है। यूं तो अन्य राज्यों में भी सत्ताधारी दल लाभ के लोभ में कोटा बढ़ाते रहने को उतावले हो सकते हैं।इसलिए बिना देरी किए, इस पर लगाम लगाना लाजमी है। कमजोर वर्ग की सहूलियत के लिए, उन्हें सहायता देने व जीवन स्तर बेहतर बनाने के अन्य तरीकों पर भी विचार किए जाने की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जाना चाहिए।

डूबती दिल्ली, मरते लोग, दोषी कौन ?

आर.के.सिन्हा

राजधानी दिल्ली में इस बार मानसून के मौसम में हो रही भारी बारिश से हाहाकर मचा हुआ है। बारिश के पानी के कारण हो रहे जलभराव में लोग डूब रहे हैं या फिर उनकी पानी में खुली बिजली की तारों से करंट लगने के कारण जानें जा रही हैं। ये हादसे दिल्ली नगर निगम और दिल्ली सरकार की काहिली और नकारापन की चीख–चीख कर पुष्टि कर रहे हैं। यूं तो हरेक बारिश के मौसम में दिल्ली में जलभराव के कारण लगने वाले लंबे जाम के कारण लाखों लोगों की जिंदगी दूभर हो ही जाती है। पर इस बार बारिश के कारण यहां वहां जमा पानी में लोगों की डूबने के कारण अनेकों जानें भी जा रही हैं। साफ है कि जिन सरकारी एजेंसियों, अफसरों और कर्मियों पर देश की राजधानी को ठीक–ठाक रखने की जिम्मेदारी है, वह अपने दायित्वों को लेकर कतई गंभीर नहीं हैं। इन सरकारी महकमों में कसकर व्याप्त करप्शन भी इस कर्तव्यहीनता का मुख्य कारण है। कुछ दिन पहले देश की संसद भवन से पांचेक किलोमीटर दूर ओल्ड राजेन्द्र नगर में तीन नौजवान तब डूब कर मर गए थे, क्योंकिय वे जिस बेसमेंट में बैठकर पढ़ रहे थे, वहां पानी भर गया था। दिल्ली की मेयर शैली आनंद के क्षेत्र से ओल्ड राजेन्द्र नगर की एक किलोमीटर भी नहीं है। इसके बावजूद वहां इतना बड़ा हादसा हुआ। आम आदमी पार्टी के सांसद ओल्ड राजेन्द्र नगर से दो मिनट की दूरी पर स्थित न्यू राजेन्द्र नगर में रहते हैं। पर उनकी पार्टी ने उनकी भी कोई क्लास नहीं ली। हादसे के लिए मात्र दो–तीन निगम के निम्न वर्गीय कर्मियों को बर्खास्त कर दिया गया। सवाल यह है कि इस हादसे के लिए दिल्ली की मेयर ने अपने पद से इस्तीफा क्यों नहीं दिया? हाल ही में बेल मिलने के बाद दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया जी अपनी दिल्ली सरकार के कामकाज की उपलब्धियां गिनवा रहे हैं। पर वे यहां जलभराव के कारण हुई मौतों पर चुप हैं। एक उम्मीद पैदा हुई थी कि ओल्ड राजेन्द्र नगर की भयानक घटना के बाद यहां नगर निगम कायदे से काम करने लगेगा। उस घटना से दिल्ली खासी व्यथित थी। जनता में गुस्सा था। पर नगर निगम का चाल–चरित्र–चेहरा नहीं बदला।

राजधानी में लोगों की जाने जाती रहीं, क्योंकि तेजी बारिश के कारण सड़कों पर पानी भरना जारी रहा और सड़कों पर पैदल चलने वालों की जान पर बन आई। दो बच्चों की करंट लगने और डूबने से मौत हो गई। दिल्ली में इस मानसून में अब तक मरने वालों की अबतक ज्ञात कुल संख्या 33 हो गई है। इतने लोगों की मौत के बावजूद यहां पर सब कुछ सामान्य रफ्तार से चलना साबित करता है कि समाज अब पूरी तरह संवेदनहीन हो चुका है। वह कभी दृकभार ही अपनी तीखी प्रतिक्रिया देता है।

देखिए, जलवायु संकट मानसून में अप्रत्याशित पैटर्न पैदा कर रहा है, जिससे छोटे, लेकिन बहुत भारी बारिश के झोंके अब सामान्य से हो गए हैं। इसके लिए ठोस योजना की आवश्यकता है, न कि बाद में किए जाने वाले उपायों की। पर हमारे यहां बदले हुए हालात के अनुसार नहीं चला जाता है। सब काम चालू तरीके से होता है। जाहिर है, इसके बहुत दूरगामी परिणाम झेलने पड़ते हैं। हम अपनी याददास्त को अगर टटोलें, तो पाएंगे कि पर्यावरण में सुधी जनों ने चेतावनी इसलिए ही बहुत पहले ही दी थी। यकीन मानिए हमारे बहुत सारे सरकरी विभागों को लकवा मार गया है। वहां कोई आगे बढ़कर स्वेच्छा से काम करने के लिए तैयार ही नहीं है। जाहिर है, इस मानसिकता के कारण ही बेकसूर लोग मारे जा रहे हैं। यह सब होने के बाद भी सरकारी अफसरों और दिल्ली सरकार के मंत्री किसी भी प्रकार

की जवाबदेही के लिए तैयार नहीं हैं। क्यों नहीं उनके खिलाफ सख्त एक्शन होता जिनकी वजह से लोग मारे जा रहे हैं या दिल्ली पानी–पानी हो रही है।

अजीब सी स्थिति है कि एक तरफ दिल्ली बारिश के कारण डूब जाती है, दूसरी ओर दिल्ली वालों को पीने का साफ पानी तक नसीब नहीं होता।राजधानी में पानी से जुड़े सारे मामलों को दिल्ली जल बोर्ड देखता है। दिल्ली जल बोर्ड का सर्वाधिक हाल बेहाल है। दिल्ली की आप सरकार के मंत्री और नेता रोज केन्द्र सरकार पर आरोपों की बौछार करने का कोई भी अवसर जाने नहीं देते। वे चिर असंतुष्ट प्राणी हैं। उन्हें सबसे शिकायतें हैं। वह कभी खुद भी अपने गिरेबान में झांक तो लें। वह खुद कब इस सवाल का जवाब देंगे कि वह दिल्ली को पेयजल के संकट से फलां–फलां तारीख तक उबार देंगे ? दिल्ली का मतलब सिर्फ हरे–भरे पेड़ों से लबरेज नई दिल्ली का लुटियन क्षेत्र ही नहीं है। राजधानी का मतलब दक्षिण दिल्ली, उत्तर दिल्ली, पश्चिम दिल्ली या यमुना पार की सभ्रांत आवासीय कॉलोनियां भी नहीं है। दिल्ली के लाखों नागरिक उन अनधिकृत कॉलोनियों, घनी बस्तियों, झुग्गियों में भी जीवन यापन करने के लिए अभिशप्त हैं,जहां पर पीने का पानी मयस्सर नहीं है। जरा सोचिए कि किन हालातों में भीषण गर्मी के मौसम में लोग रहते होंगे। राजधानी के लाखों नागरिकों के घरों में पीने का पानी नहीं आता। यह अभागे हर रोज निजी जल आपूर्तिकर्ताओं अपने दिन भर के से उपयोग के लिये पानी खरीदते हैं। दस लाख की आबादी वाले संगम विहार में दिल्ली जल निगम से पानी की सप्लाई नहीं होती। यह हाल है दिल्ली का।

जल संकट से जूझ रहे दिल्ली में लगभग आधे जल निकायों का अतिक्रमण और अन्य कारणों की वजह से नष्ट हो जाना प्रशासनिक विफलता का संकेत है। दुनिया के सबसे अधिक जल संकट वाले शहरों में से एक, दिल्ली ने आधिकारिक तौर पर सूचीबद्ध अपने लगभग आधे जल स्रोतों को खो दिया है। जिस समय देश आजाद हुआ था, उस समय दिल्ली के 362 गांवों में 1012 तालाब थे। यह सरकारी आंकड़ा है। एक सर्वे में पता चला है कि दिल्ली में दो हजार से अधिक तालाब और बावड़ियाँ होती थी। आबादी बढ़ने और दिल्ली के विकास के साथ अधिकतर तालाब खत्म कर दिए गए। कई तालाबों पर कॉलोनियां बस गई। जो तालाब बचे हैं, उनमें से आधे से अधिक लगभग सूख चुके हैं। इन तालाबों को फिर से जीवित करना होगा। जानकार मानते हैं कि राजधानी में 500 से अधिक तालाब ऐसे हैं जिन्हें बारिश के पानी से पुनर्जीवित किया जा सकता है और बारिश की पानी से दिल्ली को जलमग्न होने से बचाया जा सकता है। बहुत साल पहले पानी–तालाब पर जीवन खपा देने वाले अनुपम मिश्र ने सुझाया था कि यमुना का भी पुनर्जीवन संभव है। अगर यमुना के किनारे वजीराबाद से ओखला के बीच बड़े तालाबों की एक श्रृंखला बनाई जाये।

यदि दिल्ली में हमने जल का सही तरह से संरक्षण करना नहीं सीखा तो यहां पर पानी को लेकर भविष्य के दिनों में भारी खून–खराबा होगा। अभी भी बहुत सी अनधिकृत बस्तियों में पानी को लेकर सुबह रोज झगड़े होते हैं। कत्ल तक हो चुके हैं। जल के स्रोत सीमित हैं। नये स्रोत हैं नहीं, ऐसे में जल स्रोतों को संरक्षित रखकर एवं जल को बचाकर ही हम जल संकट का सामना कर सकते हैं। इसके लिये हमें जल के उपयोग में मितव्ययी बनना पड़ेगा। जल प्रबंधन को बेहतर करना होगा। यदि वर्षाजल का समुचित संग्रह हो सके और जल के प्रत्येक बूंद को अनमोल मानकर उसका संरक्षण किया जाये तो जल संकट का समाधान संभव है। राजधानी में रोज लाखों कारों और दूसरे वाहनों की धुलाई पर बहुत पानी बर्बाद हो जाता है। इस तरफ कोई ध्यान नहीं देता कि इस लिहाज से पानी की बर्बादी कैसे रोकी जाए। दिल्ली को अब जल संरक्षण के मसले पर सेंसटिव होना होगा। अबपानी के इस्तेमाल में हमें मितव्ययी बनना होगा। छोटे–छोटे उपाय कर जल की बड़ी बचत की जा सकती है। मसलन हम दैनिक जीवन में पानी की बर्बादी कतई न करें। समाज को खुद ही अपने मसले हल करने होंगे। यहां की दिल्ली सरकार से अब कोई उम्मीद करना बेकार है।

उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं का सम्मान

जिले के 75 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया

चित्रकूट। सामाजिक संस्था आयुष्मान वानप्रस्थ विश्वविद्यालय की ओर से दृष्टि संस्थान में आयोजित समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले जिले के 75 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया है।

शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि सदर विधायक अनिल प्रधान, विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र, सहकारी बैंक के चेयरमैन पंकज अग्रवाल व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बीके शर्मा ने शिक्षकों को तिलक लगाकर शाल ओढाकर और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया।

मुख्य अतिथि सदर विधायक ने कहा कि विश्व में वही देश प्रगति किया है जिस देश में शिक्षक का सम्मान राष्ट्रपति से भी बढकर है। उन्होंने शिक्षा के स्तर पर गिरावट पर कहा कि इसके लिये शिक्षक ही खुद आत्मचिन्तन करके सुधार करने में सक्षम हैं और कोई शिक्षा के स्तर को बढाने के लिये सक्षम नहीं हो सकता है। शिक्षक अपने शिष्यों की कामयाबी देखकर पिता से भी ज्यादा खुश होते हैं। इस मौके पर उन्होंने सभी गुरूओं को प्रणाम किया।

पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने कहा कि शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिये शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों की भी जिम्मेदारी है और सरकार भी शिक्षकों के साथ अच्छा व्यवहार करे। उन्होंने ऑनलाइन उपस्थिति पर कहा कि दूर–दूर से शिक्षक–शिक्षिकाओं को विद्यालय आना–जाना पड़ता है इस पर आधे घंटे की छूट होनी चाहिये। शिक्षकों का सम्मान दुनिया में सर्वोपरि है।

शिवलाल सिंह राजपूत ने कहा कि शिक्षा सतत चलने वाली प्रक्रिया है। अफ्रीकी राष्ट्रपति रहे नेल्सन मण्डेला की लाइनों को सुनाते हुये कहा कि शिक्षा वह हथियार है जिसमें बलबूते हम दुनियां जीत सकते हैं। लोग गुरु से ज्यादा अब गूगल को वरीयता देने लगे वहीं से शिक्षा में गिरावट आने लगी। शिवबरन त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षा के स्तर में गिरावट आई है इस सच्चाई को सभी को स्वीकारना चाहिये और इसके सुधार की दिशा में प्रयास नये सिरे से होना चाहिये। उन्होंने यहां तक कहा कि इस युग न तो छात्र बढना चाहता है और न ही शिक्षक बढाना चाहता है। यह चिन्तन करने का विषय है। बालकों में क्षमता और प्रतिभा की कमी नहीं है हमें विद्यार्थियों में विद्यमान ईश्वर प्रदत क्षमता को विकसित करने के लिये उन्हें अच्छा वातावरण देने की जरूरत है।

बीएसए बीके शर्मा ने कहा कि शिक्षा में सुधार केवल एक मात्र शिक्षक ही ला सकते हैं। इसीलिये शिक्षक को राष्ट्र निर्माता का दर्जा दिया गया है। दुनियां में कोई ऐसा तंत्र नहीं है जो दुनियां में सुधार लाने में सक्षम हो सिवाय शिक्षक के, समाज में शिक्षक का स्थान सबसे उच्च है। बस चिन्ता इस बात की है कि शिक्षक का जो मूल रूझान होना चाहिये वह नहीं दिख रहा। इसमें शिक्षकों को अपनी गरिमा का ध्यान रखते हुये अपने कर्तव्यों का संकल्पबद्ध होकर पालन करना चाहिये।

समारोह में शिक्षकों के अलावा कुछ प्रबन्धक भी रहे जिनमें जेपी मिश्र, शिवलाल राजपूत, डा मनोज द्विवेदी, प्रेमनारायण गुप्ता इसके अलावा प्रधानाचार्य डा रणवीर सिंह चौहान, छोटेलाल सिंह, शिवबरन त्रिपाठी, सुरेश चंद्र, नीतू वर्मा, मोहनलाल, अरूणा, सीमा सिंह, प्रियंका सिंह,शिवनायक यादव, दादूराम, शिक्षक फूलचन्द्र चंद्रवंशी, विजय कुमार पाण्डेय, रामचरन सिंह, शंकर प्रसाद यादव आदि शामिल रहे।कार्यक्रम का संचालन संस्था के निदेशक बलवीर सिंह ने किया। कार्यक्रम में डा एसपी त्रिपाठी, लल्लूराम शुक्ल, अनीता सिंह, विजय चन्द्र गुप्त, राजेश दुबे, दृष्टि संस्था के संस्थापक शंकर लाल गुप्त, पंकज दुबे, बसंतलाल आदि गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

लोक अदालत में 37251 मामले निपटे

जौनपुर(आरएनएस)। जनपद न्यायाधीशध्अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ौनपुर श्रीमती वाणी रंजन अग्रवाल की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन व कुशल निर्देशन तथा रणजीत कुमार, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीशध्विशेष न्यायाधीश एस0सी0एस0टी0 एक्ट, नोडल अधिकारी लोक अदालत एवं प्रशांत कुमार सिंह, अपर जिला एवं सत्र न्यायाध ीश तृतीय सचिव की देखरेख में जनपद न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती वाणी रंजन अग्रवाल, जनपद न्यायाधीश जौनपुर द्वारा मॉ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर लोक अदालत का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर श्रीमती रीता कौशिक, प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय, समस्त अपर जनपद न्यायाधीशगण, अपर प्रधान न्यायाधीशगण तथा समस्त सिविल व फौजदारी न्यायिक अधिकारीगण उपस्थित रहे। प्रभारी पीठासीन अधिकारी मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण श्रीमती अपर्णा देव द्वारा क्षतिपूर्ति के 45 मुकदमें लगाये गये जिनमें से 39 मामलों का निस्तारण कराते हुए कुल रू0 2,72,50,000 रुपये की धनराशि क्षतिपूर्ति याचीगण को दिलायी गयी। न्यायालय अपर जिला जज चतुर्थ जौनपुर द्वारा वसूली के 01 वाद का निस्तारण करते हुए 1,05,020 में समझौता कराया गया एवं विद्युत के 54 वादों का निस्तारण कराया गया। पारिवारिक न्यायालयो द्वारा 124 मुकदमों को निस्तारित किया गया जिसमें पीड़िता को मु0 1,07,05,000 रूपये की समझौता राशि प्रदान करायी गयी। विभिन्न मजिस्ट्रेट न्यायालयों द्वारा 2540 शमनीय फौजदारी वादों को निस्तारित किया गया जिनमें रू0 2,09,490 का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया। एन0 आई0 एक्ट के 05 मामलों का निस्तारण कराया गया तथा अन्य प्रकार के 219 मामलों का निस्तारण किया गया जिसमें समझौता राशि रू0 5,660 दिलाया गया। सिविल न्यायालय द्वारा कुल 39 मामलों का निस्तारण किया गया जिसमें उत्तराधिकार के मामलों में मु0 24,81,471 रूपये का प्रमाण पत्र निर्गत किया गया। प्री–लिटिगेशन स्तर पर वैवाहिक विवाद के 4 मामलों का निस्तारण किया गया तथा जिला प्रशासन के विभिन्न विभागों एवं पुलिस विभाग द्वारा भी मामलों का निस्तारण कराया गया, जिसमें राजस्व न्यायालयों फौजदारी के 1359 वादों, राजस्व के 411 वाद एवं अन्य प्रकार के 31,313 व नगर पालिका द्वारा जलकर से सम्बन्धित 20 वादों, विद्युत बिल से सम्बन्धित 10 वादों मामलों का निस्तारण किया गया। राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 37251 मामलों का निस्तारण किया गया जिसमें कुल रू० 10,84,23,062 रुपये की धनराशि पर समझौता किया गया।

पत्रकार हितों के लिए संघर्षरत है उपज

जौनपुर(आरएनएस)। उत्तर प्रदेश एसोसिएशन ऑफ जर्नलिस्टस की एक बैठक शहर के राजमहल स्थित सभागार में आयोजित की गई जिसमें जिला पदाधिकारियों का गठन कर कार्यकारिणी घोषित की गई। मुख्य अतिथि प्रदेश महामंत्री श्री कर्ण ने कहा कि पूरे प्रदेश में पत्रकार हितों के लिए उपज की एक ऐसा संगठन है जो लगातार संघर्षरत है। भदोही जिले के जिलाध्यक्ष वीरेंद्र चतुर्वेदी ने पत्रकारों के हित में संघर्ष करने के लिए संगठन का होना आवश्यक बताया और आह्वान किया कि आप सभी लोग एकजुट होकर के संगठन में कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से किसी भी समस्या का समाधान आसानी से हो जाएगा। अध्यक्षता कर रहे पत्रकार अब्दुल हक अंसारी ने कहा कि आज पत्रकारों का जो उत्पीड़न हो रहा है उसका कारण संगठनात्मक एकजुटता न होने से लोगों का मन बढ़ जाता है और पत्रकार बारी–बारी से उत्पीड़न के शिकार होते हैं। पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन किया गया जिसमें जिलाध्यक्ष सै. हसनैन कमर दीपू, महामंत्री राहुल प्रजापति, उपाध्यक्ष राजन मिश्र, आमिर अब्बास, सचिव मो. उस्मान, कृष्णा सिंह, अबु खैर, कोषाध्यक्ष अंकित जायसवाल के अलावा 11 लोगों की कार्यकारिणी गठित की गई।

संक्षेप

संवैधानिक मूल्यों को लेकर चर्चा

जौनपुर(आरएनएस)। केराकत क्षेत्र के थानागद्दी बाजार में प्रतीक की अध यक्षता में सौहार्द बन्धुत्व मंच ने बैठक कर संवैधानिक मूल्यों को लेकर चर्चा की गई।इस दौरान डॉ हरेंद्र, सविता, अनिता, चंदा, रिंकू, मिडिया साथी अरविंद,पुनम व समावेश साथी संतोष संवैधानिक मूल्यों पर प्रकाश डाला। इस बाबत नीरा आर्या ने बताया कि देश के नागरिकों के लिए बन्धुत्व का अर्थ है एक दूसरे के प्रति भाईचारे की भावनाओ का विकास करने के साथ ही एक दूसरे के गरिमा का ध्यान रखना एक दूसरे का सम्मान करना और जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करना है।उन्होंने कहा कि बन्धुता हमारे देश की एकता और अखंडता को बरकरार रखने वाला एक प्रमुख मूल्य है।संतोष पाण्डेय ने बताया कि लोकतंत्र और समानता को एक दूसरे पर आश्रित एक दूसरे से जुड़ा हुआ मूल्य है। बंधुता मंच ने संविधान के मूल्यों को व्यापक दायरे में पहुंचाने का कार्य कर रही हैं।

राज्य परियोजना निदेशक के आदेश का 10 दिन बाद भी नहीं हुआ अनुपालन

सुल्तानपुर (आरएनएस)। बेसिक शिक्षा विभाग में शासनादेश हो या राज्य परियोजना निदेशक का आदेश, अफसरों के फरमान को ठेंगे पर मार दिया जाता है। प्रकरण सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी पद के चार्ज से जुड़ा हुआ है। सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी का चार्ज अमित मोहन मिश्रा वित्त एवं लेखाधिकारी बेसिक शिक्षा को हस्तांतरित करने का आदेश राज्य परियोजना निदेशक कंचन वर्मा की तरफ से 30 अगस्त को दिया गया था। 10 दिन से अधिक बीत चुके हैं, अभी तक इस आदेश का अनुपालन करना हाथरस के विजिलेंस कांड से चर्चा में आए बेसिक शिक्षा अधिकारी उपेंद्र गुप्ता ने मुनासिब नहीं समझा है। विभागीय जानकारों का कहना है कि कमीशन खोरी के चलते चार्ज को रोका गया है। राज्य परियोजना निदेशक कंचन वर्मा ने सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी सर्वशिक्षा अभियान नरेन्द्र पाल सिंह अमेठी से अतिरिक्त प्रभार लेकर सुल्तानपुर वित्त एवं लेखाधिकारी बेसिक शिक्षा अमित मोहन मिश्रा को चार्ज लेने का आदेश दिया है। कहा जा रहा है कि वहां से कमीशन नहीं आने के अंदेशे के चलते आदेश का अनुपालन नहीं कराया जा रहा है।

डीआईजी ने सुरक्षा का लिया जायजा

चित्रकूट। मण्डलायुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी एवं पुलिस उप महानिरीक्षक अजय कुमार सिंह ने जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन एवं पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के साथ उप राष्ट्रपति के आगमन पर सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत आरोग्यधाम में बने हेलीपैड व हेलीपैड से कार्यक्रम स्थल वीआईपी मार्ग तक का निरीक्षण किया। इसके बाद जगदगुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय सीतापुर में आयोजित कार्यक्रम स्थल का भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, अपर जिलाधिकारी वित एवं राजस्व उमेश चंद्र निगम. उप जिलाधिकारी कर्वी पूजा साहू आदि मौजूद रहे।

आईएएस गामिनी ने संभाला कार्यभार

सुल्तानपुर(आरएनएस)। । एसडीएम गामिनी सिंगला ने बुधवार को कार्यभार संभाल लिया। एसडीएम का तहसीलदार अरविंद तिवारी, नायब तहसीलदार गुलाब सिंह ने स्वागत किया। एसडीएम ने अधिकारियों से परिचय लिया। एक वर्ष तक थी मेरठ के तहसील में उप जिलाधिकारी रही। बल्दीराय तहसील का चार्ज संभालने के बाद एसडीएम ने तहसील परिसर का गहन निरीक्षण किया। तहसील के कक्षों में व्याप्त गंदगी पर नाराजगी जताई। पहले दिन ही एसडीएम ने कड़े तेवर दिखाए।तहसील पहुंचकर नवागत एसडीएम कार्यालय में कुछ क्षण बैठने के बाद तहसील परिसर के निरीक्षण के लिए निकल पड़ी। एसडीएम कंप्यूटर कक्ष में पहुंचे। यहां पर शिकायती पत्रों के ऑनलाइन निस्तारण के बारे में जानकारी ली। एसडीएम ने कहा कि पीड़ित जनता को न्याय दिलाना उनकी पहली प्राथमिकता है। जनता अपनी समस्या को लेकर कभी भी दफ्तर में मिल सकती है। काम में लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। एक सवाल के जबाब में बताया कि शासन की प्राथमिकताओं का शत–प्रतिशत पालन कराना पहला कर्तव्य होगा। आम आदमी की समस्याओं का निस्तारण कराना व त्वरित न्याय पर ध्यान दिया जाएगा। बहुत जल्द परिवर्तन नजर आने लगेगा।

गाय का कटा सिर मिलने से सनसनी

सुल्तानपुर(आरएनएस)। गोसाईगंज थाना क्षेत्र के बाबूगंज नहर के पास गाय की कटी सर मिलने से क्षेत्र में हड़कंप मच गया। राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के प्रदेश प्रभारी सर्वेश कुमार सिंह की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेते हुए कटे सिर को कब्जे में लेकर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार गोसाईगंज थाना क्षेत्र के बाबूगंज नहर के पास गाय के कटे सिर को अज्ञात द्वारा फेंके जाने की सूचना लोगों को मिली। मामले की जानकारी राष्ट्रीय गौरक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के प्रदेश प्रभारी सर्वेश कुमार सिंह को होने पर आनन फानन में घटनास्थल बाबूगंज नहर के पास पहुंच गये। यह जानकारी संगठन के महामंत्री जयशंकर दुबे को फोन पर देते हुए अधिकारियों से कार्यवाही किए जाने का बात करने को कहा। उधर प्रदेश प्रभारी सर्वेश कुमार सिंह ने पुलिस प्रशासन की कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए कहा कि वर्तमान सरकार भले ही गौरक्षा, नंदी महाराज की सेवा, करने की बात करती है लेकिन प्रशासन बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा है। इस वर्ष नंदी महाराज व गौ माता के खिलाफ लोगों द्वारा क्रूरता किये जाने की घटनाएं बराबर सामने आ रही है। थाना प्रभारी प्रेमचंद ने बताया कि मामले की जानकारी हुई है घटनास्थल पर गया था गाय के कटे सर को कब्जे में लेकर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। विवेचना प्रचलित है।

प्रतियोगिता का फीता काटकर किया शुभारम्भ

मीरजापुर(आरएनएस)। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर अभिनंदन द्वारा 39वीं वाहिनी पीएसी में आयोजित 27वीं अंतरजनपदीय एलार्म एफिसिएन्सी रेस, राइफल, रिवाल्वर, पिस्टल शूटिंग प्रतियोगिता 2024 का फीता काटकर शुभारम्भ किया गया। उक्त प्रतियोगिता में वाराणसी जोन के कुल 8 जनपदों (मीरजापुर, सोनभद्र, भदोही, बलिया, मऊ, गाजीपुर, जौनपुर व आजमगढ़) की टीमों द्वारा प्रतिभाग किया गया। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर द्वारा प्रत्येक टीम के कमाण्डर से परिचय प्राप्त कर प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की शुभकामना दी गयी। इसी क्रम में सभी प्रतिभागियों के मध्य खेल भावना को बनाये रखने की शपथ दिलायी गयी। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक नगर नितेश सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन ओमप्रकाश सिंह, क्षेत्राधिकारी नगर, क्षेत्राधिकारी सदर अमरबहादुर व प्रतिसार निरीक्षक सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारीगण मौजूद रहे।

मां का स्थान सर्वोपरि: धनन्जय

जौनपुर (आरएनएस)।विधान परिषद सदस्य बृजेश कुमार सिंह प्रिंसू की माता व पूर्व प्रमुख सुरेंद्र प्रताप सिंह की पत्नी शान्ती सिंह की तीसरी पुण्यतिथि रविवार को उनके पैतृक गांव बैजारामपुर स्थित रामलखन सिंह फार्मेसी कालेज पर मनाया गया। लोगो ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।पूर्व सांसद धनंजय सिंह ने कहा कि मां का स्थान सर्वोपरि है। मां एक बगीचे की फूल है जो पूरे बगीचे को सुगंधित बना देती है। उन्होंने कहा कि जो खुद को दर्द दें और हमें खुशी दे वह मां होती है। इसलिए मां की सेवा साक्षात ईश्वर की सेवा है। पूर्व सांसद ने कहा कि मां सादगी की प्रतिमूर्ति थी। ममतामयी मां जीवन पर्यन्त असहाय एवं कमजोर वर्गो के हित में काम करती रही। राज्य सभा सांसद सीमा द्विवेदी ने कहा कि इंसान के अच्छे कर्म यादगार होते है। दुनियां में नही रहने पर भी लोग उनके कर्मों को याद करते है। शांति देवी का ही संस्कार है कि उनकी जीवनी से प्रेरणा लेकर उनके विधायक पुत्र व परिवार के लोगो ने लोगों की सेवा का संकल्प लिया। अभ्यागतो के प्रति आभार व्यक्त करते हुए एमएलसी बृजेश सिंह प्रिंसू ने कहा कि मां की प्रेरणा से वे आजीवन गरीब व असहायो की सेवा करता रहूंगा। दिन में दस बजे ही शांति सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का आरंभ हुआ। कार्यक्रम में दिनभर लोगो का आना जाना लगा रहा। भजन का भी आयोजन चलता रहा।

अपर जिलाधिकारी ने सर्पदंष से बचाव हेतु एडवाइजरी की जारी

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0)/मुख्य कार्यपालक अधिकारी जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण त्रिभुवन विश्वकर्मा ने जनपद में वर्तमान में निरन्तर हो रही सर्पदंश की घटनाओं के न्यूनीकरण हेतु सर्पदंश से बचाव हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होने बताया है कि सर्पदंश की घटनाओं के उपरान्त प्रभावित व्यक्ति की चिकित्सकीय जांच हेतु ले जाने में बहुत विलम्ब किया जा रहा है। सर्पदंश की घटना के उपरान्त गोलडन आवर निकल जाने के उपरान्त चिकित्सीय जांच में प्रभावित की उत्तरजीविता बहुत कम रह जाती है। प्रभावित व्यक्ति को घटना बाद स्थानीय लोगों द्वारा भ्रान्तीयों के कारण झाड़/फूक आदि में पड़ने के कारण प्रभावित व्यक्ति के जीवन को बचाने की सम्भावना और भी कम रह जाती है। सर्पदंश की घटना के तत्काल बाद प्रभावित व्यक्ति को कुशल चिकित्सक/पीएचसी/सीएचसी/जिला अस्पताल चिकित्सकीय जांच हेतु अनिवार्य रूप से लें जाये।

उन्होने बताया है कि सर्पदंश की घटना के बाद काटे गये जगह को साबून व पानी से धोये, दांत के निसान की जांच करें कही जहरीले सर्प के काटने का दो दंत का निशान तो नही, काटे हुये अंग को हृदय के लेवल से नीचे रखे, सर्पदंश वाले अंग को स्थिर (फिक्स) करें, बैंडेज घाव पर और उसके ऊपर लगाये, घायल व्यक्ति को सांत्वना दें, घबराहट से हृदय गति तेज चलने से रक्त संचरण तेज हो जायेगा और

> **➤ सर्पदंा के बारे में जानकारी ही बचाव है–अपर जिलाधिकारी**

> **➤ सर्पदंा की घटना के तत्काल बाद प्रभावित व्यक्ति को चिकित्सकीय जांच हेतु अस्पताल ले जाये**

जहर सारे शरीर में जल्द फैल जायेगा, तुरन्त बड़े अस्पताल ले जाये, यदि जहरीले सर्प ने काटा है तो एन्टी वेनम स्नेक–एवीएस का इंजेक्शन डाक्टर से लगवायें।

उन्होने बताया है कि सर्पदंश की घटना पर बर्फ अथवा अन्य गर्म पदार्थ का इस्तेमाल काटे गये स्थान पर न करें, सर्प से प्रभावित व्यक्ति के कटे स्थान पर टुर्निकेट न बांधे, इससे सम्बन्धित अंग में रक्त प्रवाह पूरी तरह रूक सकता है एवं सम्बन्धित अंग की क्षति हो सकती है। काटे गये स्थल पर चीरा न लगाये यह आगे नुकसान पहुॅचाता हैं।

घायल को चलने से रोके, शराब/नींद आने की कोई दवा नहीं दें, मुंह से कटे हुये स्थान को न चुसे, मंत्र या तांत्रिक के झांसे में न आये, भय एवं चिन्ता न करें सभी सॉप जहरीले नहीं होते है। सभी जहरीले सांपों के पास हर समय पूरा जहर नही होता है अगर पूरा जहर हो तो भी वो इसका प्पजींस लिथल डोज हमेशा नहीं प्रवेश करा पाते है। सॉप के काटने के उपरान्त काटने के निशान की जांच करें, जांच करें कि जहरीले या विषहीन सांप ने काटा है। सांप के विष के अनुसार एंटी वेनम इंजेक्शन लगवाया जाये। उन्होने सांप को दूर रखने के तरीके से सम्बन्ध में बताया है कि सांप के बिल में कार्बोलिक एसिड डाल दें उसके गंध से सांप दूर हो जाते है, मुर्गी के चूजे और चूहे को घरो से दूर रखें, सांप काटने से मृत व्यक्तियों में से आधे से अधिक लोग विषहीन सर्प के काटने से मरते है, सर्पदंश के बारे में जानकारी ही बचाव है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

जौनपुर(आरएनएस)। गांधी स्मारक पीजी कॉलेज समोधपुर में हिंदी दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।संगोष्ठी की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई जिसे बीए प्रथम सेमेस्टर की छात्रा कृति ने प्रस्तुत किया।संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर रणजीत कुमार पाण्डेय ने कहा कि हमें किसी भाषा से ईर्ष्या की भावना रखे बगैर अपने मूल अर्थात हिंदी से बंधे रहना है।हमें हिंदी को आगे आगे बढ़ाने के लिए सकारात्मक पहल करते रहना है। निज भाषा की उन्नति में ही हमारी उन्नति है।मुख्य वक्ता डॉ0 इंद्र बहादुर सिंह ने हिंदी भाषा के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है।विशिष्ट वक्ता डॉ नीलू सिंह ने हिंदी बोलने वालों की संख्या तो बढ़ ही रही है।इस का भाषा सोशल मीडिया पर अत्यधिक प्रयोग हो रहा है।डॉ नीलू ने स्वरचित दो हिंदी कविताएं प्रस्तुत की। पूर्वांचल विश्विद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के पूर्व समन्वयक प्रोफेसर राकेश कुमार यादव ने हिंदी के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डाला।प्रोफेसर यादव ने भारतेंदु हरिश्चंद्र के कथन निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल को उदधृत करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका की चर्चा की।बीएड विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पंकज सिंह ने विद्यार्थियों से हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग के लिए आह्वान किया।इस अवसर पर अनेक विद्यार्थियों ने अपने विचार रखे और काव्यपाठ किया। संगोष्ठी का संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष जितेंद्र सिंह ने किया व धन्यवाद ज्ञापन गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अवधेश कुमार मिश्र ने किया।इस अवसर पर प्रोफेसर लक्ष्मण सिंह, डॉ नीलमणि सिंह, डॉ अविनाश कुमार वर्मा, डॉ विष्णुकांत त्रिपाठी, श्री विकास कुमार यादव, नीलम सिंह, जितेंद्र कुमार, अखिलेश सिंह व बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे ।

गांव में समाधान कार्यक्रम संपन्न

चित्रकूट। डीएम शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में विकासखंड पहाड़ी के ग्राम पंचायत कलवलिया मे गांव की समस्या गांव में समाधान कार्यक्रम के अंतर्गत पंचायत भवन प्रांगण में जन चौपाल कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जिलाधिकारी ने ग्रामवासियों से कहा कि गांव में जन चौपाल लगाकर जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ जो समस्याएं हैं उनको सुनकर निस्तारण गांव में ही कराया जा रहा है। जल जीवन मिशन के तहत जो सड़क गांव की खराब हुई है उसका निरीक्षण कर निर्माण कराया जाएगा। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी से कहा कि गांव में कैंप लगाकर शत प्रतिशत टीकाकरण किया जाए। बाल विकास परियोजना अधिकारी पहाड़ी महेन्द्र कुमार से कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के माध्यम से देखें कि यहां पर जो योजना संचालित है उसका लाभ मिल रहा है कि नहीं। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी से कहा कि शत प्रतिशत गोवंशों का संरक्षण कराएं। ताकि किसानों की फसलों को नुकसान न हो। उन्होंने कहा कि जो प्रधानमंत्री आवास योजना में पैसा लेने की शिकायत ग्रामवासियों ने की है परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में टीम बनाकर जांच कराई जाएगी। अगर मामला सही पाया गया तो संबंधित लोगों के खिलाफ कार्रवाई होगी। नए पुल के लिए ग्रामवासियों ने बताया। इस पर शासन स्तर से वार्ता कर प्रस्ताव भेजा जाएगा। जिला समाज कल्याण अधिकारी से कहा कि पेंशन योजनाओं के लिए गांव में शिविर लगेगा। मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर ने कहा कि जो समस्याएं आज प्राप्त हुई है उनका संबंधित विभागों से निस्तारित कराया जाएगा। डीसी एनआरएलएम से कहा कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जानकारी दें। उन्होंने महिलाओं से कहा कि अपने बच्चों को स्कूल अवश्य भेजें। स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ लें। प्रधानमंत्री आवास योजना का सर्वे होगा और पात्र लोगों का चयन किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह ने किया। इस मौके पर ब्लॉक प्रमुख पहाड़ी सुशील द्विवेदी, डीसी एनआरएलएम ओम प्रकाश मिश्रा, जिला पंचायत राज अधिकारी इंद्र नारायण सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ सुभाष चंद्र, जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बीके शर्मा, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक अनुराग शर्मा, जिला पूर्ति अधिकारी आनंद कुमार सिंह, खंड विकास अधिकारी पहाड़ी संजय कुमार पांडेय, सहायक विकास अधिकारी पंचायत कमल सिंह, ग्राम प्रधान सावित्री देवी, सचिव अलकनंदा सहित संबंधित अधिकारी व ग्रामीण मौजूद रहे।

बाइक चोरी में जुटे चोर को पड़कर नागरिकों ने खंबे से बांधकर पुलिस को दी सूचना

मीरजापुर। नगर क्षेत्र में इन दिनों भोले भाले चेहरे में चोर उचक्के भी घूम रहे हैं। जो पलक झपकते ही बाइक से लेकर अन्य सामान भी लेकर रफूचक्कर हो सकतें हैं। बीती रात नगर क्षेत्र के परमापुर टेढ़वा में भी कुछ ऐसा नजारा देखने को मिला है। जहां एक युवक को लोगों ने बाइक चुराने की फिराक में जुटे एक चोर को पकड़कर उसकी दैहिक समीक्षा करते हुए मोहल्ले के लोगों ने खंभे से बांध कर पुलिस को सूचना दी है। जिनकी सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया है। पकड़ें गए युवक की पहचान अफरोज निवासी रामबाग, शहर कोतवाली क्षेत्र के रूप में हुई है। वह शहर कोतवाली क्षेत्र के ही परमापुर टेढ़वा मोहल्ले में बीती रात दो बजे संदिग्धावस्था में घूमते हुए लिखाई दिया था। जिसपर एक महिला की नजर पड़ी तो देखा कि वह एक बाइक को लेकर भागने की फिराक में था, महिला के शोर मचाने पर वह भागने लगा था।द मोहल्ले के लोगों ने बाइक लेकर भागते समय उसे दौड़ाकर पकड़ कर खंभे से बांध पुलिस को सूचना दिया। जिसके पास से एक चोरी की हीरो बाइक भी बरामद होने की चर्चा है, पकड़ा गया युवक काफी शातिर किस्म का चोर बताया जाता है। उस पर कई मुकदमे भी दर्ज होने बताए जा रहे हैं।

नगर में जुड़े नए क्षेत्रो के विकास की ओर नगर पालिका का ध्यान नहीं–आशु

सोनभद्र (आरएनएस)। बुधवार को राबर्ट्सगंज नगर पालिका के प्रभापुरम कॉलोनी ,जो पूर्व में बढ़ौली ग्राम पंचायत के अंदर आता था उसमें गली नंबर 2 पर स्थानीय निवासियों के कहनेध्बुलाने पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य आशुतोष कुमार दुबे (आशु) ने वहां पहुंचकर उनकी बातें सुनी एवं स्थानीय लोगों के साथ खराब मार्ग को लेकर प्रदर्शन भी किया। आशु दुबे ने कहा कि जहां एक ओर नगर पालिका का परिछेत्र इस बार के चुनाव में बढ़ाया गया, तो सर्वप्रथम पालिका क्षेत्र को बढ़े हुए परीक्षेत्रों के सड़क–नालियों के विषय में ध्यान देना चाहिए था, क्योंकि वह क्षेत्र नगर पालिका के हिसाब से विकसित नहीं हो पाए थे, लेकिन अगर देखा जाए तो बढ़े हुए परिक्षेत्र की बात तो दूर की रही, नगर पालिका के अंदर भी कई मार्ग एवं नालियां ऐसी हैं जहां पर अभी तक आमजनमानस को राहत नहीं मिल पाई है, नालियों का पानी सड़कों पर बह रहा है,बरसात में गंदा पानी घरों तक में घुस जा रहा है, जाम नालियां बदबू कर रही हैं। यहां की स्थिति इतनी खराब है की प्रभापुरम के गली न0 2 कॉलोनी में लोगों का आना–जाना दुश्वार हो गया है और स्थानीय जनप्रतिनिधियों का इस पर ध्यान भी नहीं है।

आशु दुबे ने कहा कि हम सब यह भली–भांति जानते हैं कि मौजूदा समय में गंदगियों से पनप रहे मच्छर से डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड का खतरा बना रहता है और अगर हम अस्पतालों में जाकर देखें तो स्थितियां नजर आ जाएंगी। अगर फागिंग हो रही है तो इतने मच्छर, बदबू और यह बीमारियां कहां से पैदा हो रही है, अधिकारियों से निवेदन ही कम से कम गलत बयान बाजी कर लोगों को भ्रमित ना करें और बाहर निकलकर अवस्थित व्यवस्था को सही करने का कष्ट करें। स्थानी निवासी तारा सोनकर ने कहा कि हम लोग इस रास्ते पर चलने को मजबूर हैं इसके लिए सभासद से कहे भी थे लेकिन वह आश्वासन देकर बात टाल दिए और हम लोग को परेशानियों को सामना करना पड़ रहा है, स्थानीय निवासी शिव शंकर सोनकर ने कहा कि जहां पर ज्यादा परेशानी है सर्वप्रथम उस जगह को नगर पालिका परिषद को ध्यान देना चाहिए ताकि आम जनमानस को राहत मिल सके, स्थानीय निवासी राजा सोनकर ने कहा कि नालियों की भी व्यवस्थाएं सही नहीं है गंदा पानी सड़क पर बह रहा हैं, उसमें से होकर चलने को हम लोग मजबूर हैं।

युवा कांग्रेस जिला महासचिव दयाराम प्रजापति ने कहा कि गंदे पानियों में बदबूदार कीड़े एवं तमाम बीमारियां पैदा होती हैं इसलिए इसे जल्द से जल्द सही करना चाहिए। युवा कांग्रेस के घोरावल विधानसभा अध्यक्ष अनिल चौबे ने कहा कि बच्चे का स्कूल न जाना भी उनके भविष्य के लिए नुकसानदाई है और इस तरह की रास्ते पर चलना उनके लिए संभव नहीं है। मुख्य रूप से उपस्थित रहने वालों में कुंदन सोनकर, मिना देवी, तारा देवी, पायल सोनकर, काजल सोनकर, बबलु सोनकर, आकाश सोनकर, राज सोनकर, विशाल सोनकर, मैना सोनकर, किशन कुमार, मंतोष कोल, फेक्कन बियार, रिंकू बियार उपस्थित रहे।

नगर आयुक्त एवं महापौर ने जन सुविधा केन्द्र का किया निरीक्षण

प्रयागराज। नगर निगम द्वारा कराये जा रहे सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट,एवं अन्य कार्यों के मॉनीटरिंग हेतु नगर निगम प्रयागराज में स्थापित एस0 डब्लू0एम0 कन्ट्रोल रूम का निरीक्षण महापौर उमेश चन्द्र गणेष केसरवारी एवं नगर आयुक्त चन्द्र मोहन गर्ग द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान कन्ट्रोल रूम के माध्यम से नगर क्षेत्र की साफ–सफाई, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट एवं अन्य जन सुविधाओं हेतु कराये जा रहे कार्यों की ऑन लाईन मॉनीटरिंग हेतु स्थापित एस0डब्लू0एम0 कन्ट्रोल रूम में निम्न तकनीकी से मॉनीटरिंग करायी जा रही है। प्रयागराज नगर निगम अपने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यू एम) नियंत्रण कक्ष के माध्यम से शहर की स्वच्छता बनाए

रखने के लिए उन्नत तकनीक का उपयोग कर रहा है। पायलेट बेसिस पर एआई– आधारित मॉनीटरिंग सिस्टम विकसित कराया गया है जिससे षहर की साफ सफाई, अतिक्रमण अवैध विज्ञापन एवं स्ट्रीट लाईट की मॉनीटरिंग करायी जा रही है। कन्ट्रोल रूम के माध्यम से कचरे के कलेक्षन एवं ट्रान्सपोर्टेषन,कचरा प्रोसेसिंग,माप–तौल,बीट के अनुसार सफाई कार्य,पार्कों के निर्माण एवं साफ–सफाई, षौंचालयों की साफ–सफाई, नाला सफाई, विज्ञापन एवं अन्य नागरिक सुविधाएं जो नगर निगम, प्रयागराज द्वारा जनहित में करायी जा रही है की मॉनीटरिंग ऑन लाईन की जा रही है। समस्त पोर्ट स्टेषन एवं नगर निगम के प्रोसेसिंग प्लान्ट पर सीसीटीवी कैमरे स्थापित हैं। आईसीसीसी इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के माध्यम से पोर्ट स्टेशन की सफाई और सड़क सफाई गतिविधियों की निगरानी करायी जा रही हैं। भविष्य की योजनाओं में विज्ञापनों और आवारा जानवरों की निगरानी के लिए इस प्रणाली का विस्तार करना शामिल है। एस0डबलू0एम0 कन्ट्रोल रूम के माध्यम से करायी जा रही ऑन लाइन मॉनीटरिंग से षहर की स्वच्छता में व्यापक सुधार प्राप्त हो रहा है जिसका लाभ महाकुम्भ मेला के दौरान षहर की स्वच्छता बनाये रखने में प्राप्त होगी।

03 अक्टूबर को लगने वाले मेले में नि:शुल्क बीज प्राप्त करने हेतु करायें पंजीकरण

प्रयागराज। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने बताया है कि एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना, नमामि गंगे योजना, औद्यानिक विकास योजना (एस0सी0पी0) के तहत संकर सब्जी की खेती, रबी प्याज की खेती हेतु लक्ष्य प्राप्त हुआ है। उन्होने बताया है कि जनपद का कोई भी इच्छुक कृषक खतौनी, बैंक पासबुक, आधार कार्ड की छायाप्रति एवं एक पासपोर्ट साइज फोटो लगाकर कार्यालय में पंजीकरण करा सकता है तथा दिनांक 03 अक्टूबर 2024 को उद्यान विभाग के कार्यालय कैम्पस में लगने वाले बीज मेले में लक्ष्य के अनुसार उच्च गुणवत्ता का बीज निःशुल्क प्राप्त कर सकता है। योजना का लाभ प्रथम आवक–प्रथम पावक के आधार पर देय है।

मुख्य विकास अधिकारी ने विकास खण्ड का किया निरीक्षण

प्रयागराज। जिले की कमान जब से मुख्य विकास अधिकारी दिव्या मिश्रा ने संभाली है तब से लगातार जनपद के विभिन्न ब्लाकों में पहुंचकर विकास

कार्यों का निरीक्षण कर रही है। मुख्य विकास अधिकारी दिव्या मिश्रा ने विकास खंड सांगीपुर का निरीक्षण करते हुए ग्राम प्रधानों को एवं महिलाओं को किया जागरुक। सीडीओ ने गोष्ठी कार्यक्रम में मौजूद सभी लोगों को स्वच्छता की और पर्यावरण की रक्षा करने की शपथ दिलाई। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि गौशालाओं में पशुओं के लिए हरा चारा और भूसा भरपुर मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए।

उत्तर मध्य रेलवे
निविदा सूचना सं. 9320242025 ई-निविदा सूचना दिनांक : 20.09.2024
मण्डल रेल प्रबन्धक/इंजीनियरिंग/उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्यों के लिये ई-निविदाएं प्रपत्र पर दिनांक 16.10.2024 को 13:30 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। कार्यों का विवरण निम्न प्रकार हैः-
क्र.सं. : 1- निविदा नं.: 206, कार्यों का विवरण : सहायक मण्डल अभियन्ता/मु/द्वितीय/कानपुर के अंतर्गत एस.एस.ई/डब्लू/स्टे./कानपुर के अनुभाग में एक वर्ष के लिए कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन पर सीवर लाइन सफाई का कार्य।
अनुमानित मूल्य (₹): 82,79,592.20 | बयाने की रकम (₹): 1,65,600.00
कार्य समापन की अवधि : 12 माह
इलिजिबिलिटी क्राइटरिया के अर्न्तगत सिमिलर कार्य : कोई सिविल इंजीनियरिंग कार्य
क्र.सं. : 2- निविदा नं.: 207, कार्यों का विवरण : सहायक मण्डल अभियन्ता/लाइन/ कानपुर के अंतर्गत एस.एस.ई/डब्लू/लाइन/कानपुर के अनुभाग में दो वर्ष के लिए रेलवे कालोनी में सीवर लाइन/खुली नाली/ढकी हुई नाली और सेप्टीक टैंक की सफाई का कार्य।
अनुमानित मूल्य (₹): 28,81,224.00 | बयाने की रकम (₹): 57,600.00
कार्य समापन की अवधि : 24 माह
इलिजिबिलिटी क्राइटरिया के अर्न्तगत सिमिलर कार्य : निल
क्र.सं. : 3- निविदा नं.: 208, कार्यों का विवरण : कानपुर - सेन्ट्रलः- सहायक मण्डल अभियन्ता/मुख्यालय/द्वितीय/कानपुर के अंतर्गत कानपुर सेंट्रल स्टेशन के बाहरी भागों में सुधार का कार्य।
अनुमानित मूल्य (₹): 1,14,77,465.00 | बयाने की रकम (₹): 2,07,400.00
कार्य समापन की अवधि : 06 माह
इलिजिबिलिटी क्राइटरिया के अर्न्तगत सिमिलर कार्य : कोई सिविल इंजीनियरिंग कार्य
निविदा खुलने की तिथि : क्र.सं.: 1 से 3 के लिये- 16.10.2024
नोटः- (1) आन लाइन निविदा दिनांक 16.10.2024 को 13:30 बजे तक प्रस्तुत की जा सकती हैं। (2) उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) वेबसाइट www.ireps.gov.in पर समय 13:30 बजे टेण्डर खुलने की तिथि 16.10.2024 तक उपलब्ध है। 1691/24 (MG)
North central railways @ CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

जनपद न्यायाधीश एवं जिलाधिकारी ने किया केन्द्रीय कारागार का निरीक्षण

प्रयागराज। न्यायाधीश संतोष राय एवं जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार मॉदड़ के द्वारा शुक्रवार को केन्द्रीय कारागार, नैनी का निरीक्षण करते हुए आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। इस अवसर पर डीसीपी यमुना नगर विवेक कुमार यादव,सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण दिनेश कुमार गौतम,मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शशि कुमार,जेलर अंजनी कुमार गुप्ता,जेलर डॉ0 आलोक कुमार व चिकित्साधिकारी डॉ0 वेद प्रकाश चन्द्र सहित अन्य

अधिकारीगण उपस्थित रहे। जनपद न्यायाधीश एवं जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान केन्द्रीय कारागार में कारागार चक्र संख्या –4, चक्राधिकारी कार्यालय, चिकित्सालय, रसोई घर का निरीक्षण करते हुए वहां पर आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिला जज एवं जिलाधिकारी ने रसोई घर में बंदियों को दिए जाने वाले प्रतिदिन भोजन व नाश्ते का मीनू चार्ट के अनुसार जानकारी लेते हुए भोजन बनाने की व्यवस्था को देखा तथा कितने बंदियों के लिए एवं कितनी मात्रा में क्या बन रहा है, की जानकारी लेते हुए खाने की गुणवत्ता को परखा। उन्होंने चिकित्सा अधिकारी से चिकित्सालय में उपलब्ध व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। माननीय जनपद न्यायाधीश ने विचाराधीन कैदियों से बातचीत कर उनको प्राप्त हो रही विधिक सेवाओं एवं उनके हिस्ट्री टिकट को देखते हुए सम्बंधित आपराधिक प्रकरण की जानकारी ली। उन्होंने बंदियों से बीमारी, खान–पान एवं साफ– सफाई की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। माननीय जिला जज एवं जिलाधिकारी के द्वारा केन्द्रीय कारागार परिसर स्थित वीसी रूम में अत्यधिक भीड़ व वहां पर कम स्थान होने के दृष्टिगत वीसी रूम के बाहर टीन शेड व कुर्सियों की व्यवस्था किए जाने तथा बंदियों के हेल्थ चेकअप की व्यवस्था हेतु हेल्थ चेकअप माइक्रो यूनिट लगाये जाने व अन्य आवश्यक व्यवस्थायें उपलब्ध कराये जाने के लिए कहा है।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से स्वच्छता के लिए किया गया जागरूक

प्रयागराज। 02 अक्टूबर तक मनाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत प्रयागराज मंडल में 27 सितंबर को 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' नुक्कड़ नाटक के माध्यम से कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अथिति अपर मण्डल रेल प्रबंधक/परिचालन, अजय कुमार राय के साथ वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी,मनीष कुमार खरे,वरिष्ठ मण्डल पर्यावरण एवं रखरखाव प्रबंधक, आलोक केशरवानी एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर अपर मण्डल रेल प्रबंधक/परिचालन,अजय कुमार राय ने कहा कि गांधी

जी ने स्वच्छ भारत का सपना देखा था और अब हम सबकी जिम्मेदारी है की घर कार्यालय और पूरे देश को स्वच्छ बनाएं। देश स्वच्छ होगा तभी स्वस्थ होगा। हम सभी लोग कूड़ा– कचरा निर्धारित स्थान पर ही फेंकें। आगामी महाकुंभ में देश विदेश से पर्यटक और श्रद्धालु आएंगे । हम सभी को शहर और देश की स्वच्छता में भागीदारी करनी है । इस वर्ष भी स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में श्स्वच्छता ही सेवाश 2024 अभियान श्स्वभाव स्वच्छता– संस्कार स्वच्छताश थीम के साथ मनाया जा रहा है। इसी क्रम में रेल प्रशासन स्वच्छता ही सेवा 2024 की थीम ष्स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छताष के अंतर्गत पूरे भारत में स्वच्छता के प्रयासों में जन भागीदारी की भावना को जागृत करने का प्रयास कर रहा है । मण्डल के विद्युत विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किए गए नुक्कड़ नाटक में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया । स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' नुक्कड़ नाटक में रेलवे कर्मचारी सिद्धार्थ,महेंद्र सिंह पटेल,अनूप पाल, मासूम, निखिल एवं कुँवर उदय प्रताप ने अच्छी कला का प्रदर्शन किया।

सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी व कर्मचारियों ने लिया पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प

प्रयागराज। डी एल डब्ल्यू वाराणसी स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता को साकार रूप देने के लिए बनारस रेल इंजन कारखाना के उप मुख्य कार्मिक अधिकारी, मुख्यालय श्याम बाबू की उपस्थिति में सितंबर माह में सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी एवं कर्मचारियों ने बरेका परिसर में वृक्षा रोपण किया। इस अवसर पर सहायक कार्मिक अधिकारी एम.ए. अंसारी,मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरिक्षक विजय कुमार गुप्ता एवं अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे। बरेका

द्वारा शुरू की गई एक अनूठी पहल के अंतर्गत,पर्यावरण के प्रति समर्पित भाव से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के साथ बरेका परिसर में "एक पेड़ मां के नाम लगाओ" अभियान के तहत पौधारोपण किया गया। यह पौधारोपण न केवल पर्यावरण के लिए लाभदायक है, बल्कि यह हमारे जीवन को भी समृद्ध और खुशहाल बनाता है।

स्ट्रीट वेन्डर एक्ट का उलंघन कर पी एम स्वनिधी लाभार्थियो को किया बेदखल

प्रयागराज। प्रधानमंत्री की महत्वाकाछी योजना पीएम स्वनिधी में नगर निगम ने जिनका किया रजिस्ट्रेशन,दिया एलओ आर उन्ही गरीबो को उजाड़ दिया कच्चा माल सहित ठेला उठा ले गये । आजाद स्ट्रीट वेंडर युनियन के प्रदेश महासचिव टीवीसी सदस्य रविशंक द्विवेदी आजाद पार्क गेट 1 के सामने उजाड़े गये फुटपाथ दुकानदारो के साथ नगर निगम में महापौर गणेश केसरवानी से मिल कर नगर निगम अतिक्रमण दस्ते के ताना शाही रवैये से गरीब कमजोर पीएम स्वनिधी लाभाभी भुखमरी के कगार पर आ जायेंगे। टीवीसी कमेटी को बिना पूर्व सूचना नोटिस दिये अतिक्रमण

दस्ता पहुंचा फुटपाथ दुकानदारो को धमकाने लगे 2000 रुपये का चालन अवैध तरीके से वसूला गया जिन गरीब दुकानदारो ने चालान नहीं दिया उनका ठेला उठा ले गये। महापौर ने अतिक्रमण प्रभारी अरविंद राय अपर नगर आयुक्त दीपेन्द्र यादव स्मार्ट सिटी संजय को बुला कर सामने वार्ता की महापौर ने सभी दुकानदारो को व्यवस्थित तरीके से दुकाने लगवाने के लिए पार्षद बबलू रघुवंशी टीवीसी सदस्य रविशंकर द्विवेदी को जिम्मेदारी दी नाईट माक्रेट की सुबह की पाकिंग खलवाने के साथ वहां के किराया निधारण के निर्देश दिया। इस दौरान उपस्थित पार्षद नीरज जयसवाल आशीष द्विवेदी सुनीता चोपड़ा रितेष मिश्रा ने अपना पूरा समर्थन दिया उपस्थित अधिकारियो से पूंछा किसके कहने पर पीएम स्वनिधी लाभार्थियो को उजाड़ा गया । इस दौरान माक्रेट युनियन की मैरी मुकेश सोनकर एल सी लाटियस मानू ज्ञान उज्जवल एथोनी कुलदीप सहित सभी उजाड़े गये दुकानदार मौजूद रहे।

रेलवे नियमानुसार अवैध कब्जे पर करेगी विधिक कार्यवाई

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे द्वारा प्रधानमंत्री की महत्वकांक्षी परियोजना पं० दीन दयाल उपाध्याय–प्रयागराज तीसरी रेलवे लाइन कार्य किया जा रहा है जिसे 2025 में यातायात के लिए खोलने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। परियोजना के निर्माण हेतु प्रयागराज जनपद में भूमि अधिग्रहण का कार्य अपने अंतिम दौर में है। परियोजना के संरेखण में लगभग 167 संरचनाओ को चिन्हित किया गया है जिनका भुगतान कास्तकारों को मिल चुका है परन्तु अभी तक कब्जा हटाने में व्यवधान उत्पन्न किया जा रहा है जिस कारण परियोजना का कार्य प्रभावित हो रहा है। इस सम्बन्ध में रेलवे ने अतिक्रमण ध्वस्त करने से पहले की सभी विधिक तैयारियां पूर्ण कर ली है। कास्त कारों को 21.09.2024 तक का समय दिया गया था, चूंकि नोटिस की समय सीमा समाप्त हो चुकी है अतः अब किसी भी समय रेलवे द्वारा नियमन अनुसार विधिक कार्यवाही की जा सकती है। रेलवे अधिकारियों ने बताया है कि कब्जा धारकों को कब्जा हटाने के लिए पर्याप्त समय दिया गया था। ऐसे अवैध कब्जा धारकों को चिन्हित कर लिया गया है जिन्होने भुगतान पाने के बावजूद अवैध कब्जा नहीं हटाया है। इस प्रक्रिया में आने वाले व्यय को कब्जा धारक से वसूला जायेगा। इसी कम में करछना व मेजा तहसील के तीसरी लाइन में आने वाले सभी अवैध कब्जों को सितम्बर माह के अंत तक विधिक कार्यवाही की जाएगी।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय सलाहकार एवं समीक्षा समिति की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार मॉदड़ की अध्यक्षता में जिला स्तरीय सलाहकार एवं समीक्षा समिति (बैंकर्स) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने बैठक में उपस्थित विभिन्न बैंको के प्रतिनिधियों को सरकार की योजनाओं से संबंधित पत्रावलियों का नियमानुसार शीघ्रता के साथ निस्तारण करने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने सभी बैंकों को निर्देश दिया कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना एवं सरकार द्वारा प्रायोजित अन्य योजनाओ के अन्तर्गत अधिक से अधिक पात्र लोगो को चिन्हित कर उन्हें ऋण वितरण करने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी बैंकों

को लम्बित आवेदनों के निस्तारण करने के निर्देश दिये। उन्होंने सरकार की योजनाओं में रूचि न लेने वाले बैंको के प्रतिनिधियों को चेतावनी देते हुए कहा कि बैंक सरकार द्वारा प्रायोजित योजना में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले और पात्र लोगो का चयन करते हुए उन्हें योजना से लाभान्वित करें, नहीं तो सम्बंधित के विरूद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। जिलाधिकारी ने सभी बैंकों के सीडी रेशियों की बैंकवार विस्तृत समीक्षा करते हुए 50 प्रतिशत से कम सीडी रेशियों वाले बैंकों के जिला समन्वयकों से नाराजगी व्यक्त करते हुए लक्ष्यों के अनुरूप कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्राथमिक क्षेत्र को सभी बैंक समय पर ऋण वितरण कर सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने में सक्रियता से कार्य करें। जिलाधिकारी ने जिले के विकास के लिए प्राथमिक क्षेत्र में ऋण वितरित कर विकास में सहभागी बनने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ अंतिम पायदान तक पहुंचेगा, तो कृषि संबंधित ऋण में अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकेंगे। जिलाधिकारी ने ग्राम पंचायतों में चौपाल लगाकर लोगो को योजनाओं के बारे में जानकारी दिए जाने के लिए कहा है। उन्होंने सभी बैंकर्स से कहा कि कृषि, रिटेल, सूक्ष्म लघु उद्योग एवं मध्यम उद्योग के क्षेत्र में अधिक से अधिक ऋण स्वीकृत करें, जिससे कि जिले का सीडी रेशियों औसत सीडी रेशियों के बराबर में लाया जा सके। उन्होंने अधिक से अधिक किसानों को केसीसी व फसली बीमा से लाभान्वित कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने जिले के सभी बैंकों को निर्देश दिया कि जो भी निर्देश इस बैठक में दिया गया, उन निर्देशों का पालन सभी बैंक सुनिश्चित करें।

जिला कृषि अधिकारी ने उर्वरकों की रैक का किया निरीक्षण

प्रयागराज। उर्वरकों की महंगे दामों पर बिक्री एवं उनके अवैध परिसंचलन को लेकर प्राप्त हो रही शिकायतों के क्रम में के0के0 सिंह,जिला कृषि अधिकारी द्वारा अपनी टीम के साथ 26 सितंबर को नैनी रैक प्वाईंट पर प्लेस हुयी गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कम्पनी की फास्फेटिक उर्वरकों की रैक का निरीक्षण किया गया तथा रैक प्वाईंट से ही उर्वरक सम्भार का प्रेषण फुटकर उर्वरक विक्रेताओं को कराया गया। उर्वरकों से लोड किये जा रहे ट्रकों की जॉच की गयी एवं उनको निर्गत किये गये ई–वे बिल/इनवाइस का गहनता से परीक्षण किया गया। उर्वरक फुटकर विक्रेता जिनको उक्त उर्वरकों की आपूर्ति की गयी है, को चिन्हित करते हुये क्षेत्रीय कर्मचारियों के माध्यम से उनके प्रतिष्ठान को आपूर्तित उक्त फास्फेटिक उर्वरकों की मात्रा का भौतिक सत्यापन कराया गया। अन्तर्राज्यीय सीमाओं के निकट वर्ती विकास खण्ड़ों में कृषि, राजस्व एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीमों का गठन कराकर उर्वरकों के अवैध परिसंचरण को रोकने के लिये निरन्तर निगरानी की जा रही है एवं अन्तर्राज्यीय सीमा के निकटवर्ती स्थापित उर्वरक प्रतिष्ठानों पर क्षेत्रीय कर्मचारियों के माध्यम से औचक निरीक्षण कराकर पी0ओ0एस0 मशीन में प्रदर्शित स्टाक के सापेक्ष उपलब्ध भौतिक स्टाक का सत्यापन कराया जा रहा है ताकि किसी भी प्रकार से उर्वरकों का अवैध परिसंचरण न होने पाये। जिलाधिकारी महोदय, प्रयागराज के निर्देशानुसार 25 से 30 सितम्बर,के मध्य अभियान चलाकर जनपद में स्थापित समस्त उर्वरक प्रतिष्ठानों पर उपलब्ध भौतिक स्टाक का सत्यापन क्षेत्रीय कार्मिकों के माध्यम से कराया जा रहा है ताकि किसी भी दशा में उर्वरकों का अन्तर्राज्यीय एवं अन्तर्जनपदीय परिसंचरण न होने पाये। उर्वरकों की कालाबाजारी, महंगे दामों पर बिक्री एवं अवैध परिसंचलन को रोकने के उद्देश्य से जिला कृषि अधिकारी कार्यालय प्रयागराज में कन्ट्रोल रूम स्थापित किया गया है जिसका मोबाईल नं0–783988 2319 है। कृषक भाई उर्वरक से सम्बन्धित अपनी समस्त समस्याओं के सम्बन्ध में उक्त मोबाईल नम्बर पर सम्पर्क कर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। प्राप्त होने वाली समस्याओं/शिकायतों को शिकायत रजिस्टर में अंकित करते हुये, प्राथमिकता के आधार पर उनका निराकरण कराया जायेगा। उर्वरक निरीक्षकों द्वारा निरन्तर क्षेत्र में भ्रमणशील रहते हुये उर्वरक प्रवर्तन सम्बन्धी कार्यवाही की जा रही है तथा कृषकों को गुणवत्तायुक्त उर्वरकों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संदिग्ध उर्वरक स्टाक से नमूने ग्रहित कर उनका परीक्षण प्रयोग शाला में कराया जा रहा है एवं मानक के अनुरूप परिणाम प्राप्त न होने की दशा में सम्बन्धित उर्वरक विक्रेता का उर्वरक विक्रय प्राधिकार पत्र निरस्त किया जाता है। समस्त थोक विक्रेताओं को निर्देशित किया गया है कि कृषक भाईयों को उनकी जोत/खतौनी के आधार पर,संस्तुत मात्रा में ही उर्वरकों का विक्रय निर्धारित मूल्य पर किया जाये। यदि उर्वरकों की कालाबाजारी,महंगे दामों पर विक्रय,जमाखोरी, टैगिंग,अवैध परिसंचरण आदि की स्थित प्रकाश में आती है तो सम्बन्धित थोक/फुटकर उर्वरक विक्रेतता के विरूद्ध आवश्यक वस्तु अधिनियम–1955, उर्वरक नियंत्रण आदेश–1985 एवं उर्वरक परिसंचलन आदेश –1973 के सुसंगत प्राविधानान्तर्गत कठोर विधिक कार्यवाही सम्पादित करायी जायेगी। कृषि विभाग,कृषक भाईयों को निर्धारित मूल्य पर गुणवत्तायुक्त उर्वरकों की स–समय आपूर्ति कराने हेतु प्रतिबद्ध है।

जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने से स्वास्थ्य केंद्र बना तालाब

प्रयागराज। जनपद के नगर पंचायत कोहड़ौर के अंतर्गत स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को जाने वाले रास्ते में हुआ जलभराव। नगर पंचायत में बारिश के दिनों में स्वास्थ्य केंद्र के सामने रास्ते में होने वाले जलभराव से निपटने के लिए नहीं की गई कोई व्यवस्था। जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण बरसात आते ही हो जाती है जलजमाव की समस्या। बारिश का पानी अस्पताल परिसर के रास्ते में भर जाने के कारण मरीजों को आने जाने में करना पड़ रहा चुनौती का सामना। अस्पताल परिसर में बारिश का पानी जमा होने से पनप रही बीमारियां।

डा,संजय कुमार के सफल प्रयास से अर्जुन लाल को मिली नई जिंदगी

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे केंद्रीय अस्पताल में एक जटिल ऑपरेशन के माध्यम से,डॉ. संजय कुमार,सीनियर डीएमओ सर्जरी ने अर्जुन लाल उम्र 71 साल नामक मरीज को नई जिंदगी देने में सफलता प्राप्त की। अर्जुन लाल पिछले 4 वर्षों से बहुत बड़े अम्बिलिकल हर्निया से पीड़ित थे, जिससे वह दैनिक दिनचर्या के कार्यों को करने में असमर्थ थे। उन्हें मोटापा उच्च रक्त चाप और मधुमेह जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ रहा था,जिन्हें मेटाबोलिक सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है। मरीज का आत्मविश्वास बहुत कम हो गया था और वह सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ थे। उन्होंने लगभग उम्मीद

खो दी थी और अपना जीवन इसी स्थिति में बिताने के लिए तैयार थे। डॉ. संजय कुमार और उनकी टीम ने रक्त शर्करा को नियंत्रित करने के बाद, न्यूनतम चीरा लगाकर इस जटिल मामले का सफल ऑपरेशन किया। इस ऑपरेशन की खास बात ये थी की हर्निया का साइज बहुत बड़ा होने के कारण पेट की मांस पेशियों में बहुत बड़ा गैप था जिसके लिए बहुत ही छोटे चीरे के पेट की दीवारों का मांस की सहायता से पुनः निर्माण किया गया (।इकवउपदव चसेंजल)। ऑपरेशन के मात्र 3 दिन बाद, मरीज चलने में सक्षम हो गया। अर्जुन लाल ने केंद्रीय अस्पताल के सर्जरी की टीम जिसमे डॉक्टर आलोक यादव (एनेस्थेटिस्ट) नर्सिंग सुप्रीटेंटेंट हरीश कुमार शर्मा, प्रीति सिस्टर , मंजु सोनकर चिकत्सा सहायक मूलचंद,रेखा ड्रेसर आरती प्रसाद एवम अमित शुक्ला।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062